

विश्लेषिका

आईएसएसए की गृह-पत्रिका

अंक 27, वर्ष 2025-26

साहित्य एवं विविध



पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

रक्षा मंत्रालय, मेटकॉफ भवन परिसर, दिल्ली-110054

अंक 27, वर्ष 2025-26

विश्लेषिका

(आईएसएसए की गृह-पत्रिका)

साहित्य एवं विविध



पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

रक्षा मंत्रालय, मेटकॉफ भवन परिसर, दिल्ली-110054

डॉ. समिर वी. कामत
Dr. Samir V. Kamat



सचिव, रक्षा अनुसंधान तथा विकास विभाग
एवं
अध्यक्ष, डीआरडीओ
Secretary, Department of Defence R&D
&
Chairman, DRDO



संदेश

यह प्रसन्नता का विषय है कि 'पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान' द्वारा अपनी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के नवीन साहित्यिक संस्करण (अंक 27) का प्रकाशन किया जा रहा है। पत्रिका अपने उद्देश्य-कार्यालयीन वातावरण में हिंदी भाषा एवं साहित्यिक चेतना के संवर्धन को निरंतर आगे बढ़ा रही है।

हिंदी केवल संवाद का माध्यम नहीं, अपितु हमारी सांस्कृतिक स्मृतियों, संवेदनाओं और अभिव्यक्तियों का आधार भी है। साहित्यिक सृजन एवं पठन-पाठन न केवल भाषा कौशल को सुदृढ़ करते हैं, बल्कि मनुष्य की रचनात्मकता और विचार-संपन्नता को भी समृद्ध करते हैं। मुझे आशा है कि यह अंक पाठकों को नई सोच देगा और भाषिक रचनात्मकता को और अधिक प्रेरित करेगा।

मैं इस अवसर पर सभी लेखकों, कवियों, संपादन मंडल और सहयोगियों को शुभकामनाएँ देता हूँ जिनके योगदान से यह संभव हो सका है। मुझे विश्वास है कि 'विश्लेषिका' आगामी वर्षों में भी इसी उत्साह और गुणवत्ता के साथ निरंतर प्रगति करती रहेगी।

स्मिर वी कामत

(डॉ. समिर वी. कामत)

शीना राणी आर
वि. व. एवं महानिदेशक
(एम डी डी, सी ओ एस एवं सी एस)

SHEENA RANI R
DS and Director General
(MED, CoS & CS)



सत्यमेव जयते



एक कदम स्वच्छता की ओर

भारत सरकार
Government of India
रक्षा मंत्रालय

Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
Defence Research & Development Organisation
र.अ.वि.सं. मुख्यालय, डी.आर.डी.ओ. भवन
DRDO HQrs., DRDO Bhawan
राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
Rajaji Marg, New Delhi-110011
Tele : 011-23012505, 23016281, 23016284
Fax : 011-23016280
e-mail : dgmedcos.hqr@gov.in



संदेश

यह हर्ष का विषय है कि इस वर्ष आईएसएसए द्वारा हिन्दी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के साहित्यिक अंक (अंक 27) का प्रकाशन किया जा रहा है। यह पत्रिका आईएसएसए संस्थान की गतिविधियों और कार्मिकों की प्रतिभाओं का दर्पण होने के साथ-साथ राजभाषा हिंदी के विकास की भी सूचक है।

इस अंक में मुद्रित साहित्यिक विधाओं की रचनाओं के माध्यम से सृजनात्मक अभिरुचि, आषिक परिष्कार और मौलिक सोच का सुंदर सामंजस्य देखने को मिलता है। निःसंदेह इससे विचार-विस्तार, भाषा-समृद्धि, नवीन दृष्टिकोण और पठन-पाठन की संस्कृति का विकास होगा। रचनात्मक लेखन पाठक की संवेदना और भावनाओं को विस्तृत करता है। आईएसएसए संस्थान द्वारा हिन्दी साहित्य लेखन परंपरा में रचनात्मक सहयोग देने के लिए साहित्य अंक का प्रकाशन करना सराहनीय है।

मैं इस अवसर पर सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के योगदान और सम्मिलित प्रयासों की सराहना करती हूँ और पत्रिका के साहित्यिक अंक की सफलता की कामना करती हूँ।

स्थान: नई दिल्ली

(शीना राणी आर)

सुनील शर्मा
उत्कृष्ट वैज्ञानिक
एवं
निदेशक (डी पी ए आर ओ एंड एम)
Sunil Sharma
OUTSTANDING SCIENTIST
&
DIRECTOR (DPARO&M)



अ.स.प.सं./DO No.
भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
Government of India, Ministry of Defence
रक्षा अनुसंधान तथा विकास संगठन
Defence Research and Development Organisation
संसदीय कार्य, राजभाषा एवं संगठन पद्धति निदेशालय
Directorate of Parliamentary Affairs, Rajbhasha and
Organisation & Methods (DPARO&M)
'ए' ब्लॉक, प्रथम तल
'A' Block, First Floor
डी.आर.डी.ओ. भवन, राजाजी मार्ग, नई दिल्ली-110011
DRDO Bhawan, Rajaji Marg, New Delhi-110011
दूरभाष/Telephone: 23013248, 23007125
फैक्स/Fax: 23011133, 23013059



संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है कि पिछले वर्ष की भांति इस वर्ष भी "पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान", दिल्ली द्वारा हिंदी गृह पत्रिका 'विश्लेषिका' के नवीन साहित्यिक अंक (अंक 27) का प्रकाशन किया जा रहा है। यह अंक न केवल कार्मिकों की संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का माध्यम है बल्कि राजभाषा हिन्दी के प्रोत्साहन और भाषा संवर्धन की दिशा में हमारी प्रतिबद्धता का भी सशक्त प्रतीक है।

साहित्य मानवीय भावों, विचारों, संस्कृति का मुख्य आधार है। इस साहित्यिक अंक में विविध विधाओं जैसे कि कविता, कहानी, निबंध, संस्मरण आदि के माध्यम से हमारे सहकर्मियों की रचनात्मकता और भाषिक कौशल का सकारात्मक रूप उभरकर सामने आया है। यह अंक हमें आत्मअन्वेषण, चिंतन और रचनात्मक विचारों की दिशा में प्रेरित करेगा तथा राजभाषा हिंदी के साहित्यिक सौन्दर्य और अभिव्यक्ति को अधिक पुष्ट करेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि प्रस्तुत सामग्री साहित्य के विभिन्न आयामों का परिचय कराते हुए पाठकों के लिए एक सुखद और सार्थक अनुभूति सिद्ध होगी।

'विश्लेषिका' के इस साहित्यिक अंक के प्रकाशन पर मैं संपादक मंडल, लेखकों, सहयोगी कर्मियों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ और पत्रिका की सफलता की कामना करता हूँ।

स्थान: नई दिल्ली

(सुनील शर्मा)

दीपाक्षी शाह
उत्कृष्ट वैज्ञानिक एवं
निदेशक

Deepakshi Shah
Outstanding Scientist &
Director



सत्यमेव जयते



एक जगत् सत्यता ही जीत

भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय
रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन
पद्धति अध्ययन तथा विश्लेषण संस्थान
मेटकाल्फ हाउस, दिल्ली - 110 054

Government of India, Ministry of Defence
Defence Research & Development Organisation
Institute for Systems Studies & Analyses
Metcalfe House Complex, Delhi -110054



संदेश

'विश्लेषिका' की प्रकाशन यात्रा को गतिमान रखते हुए वित्त वर्ष 2025-26 में 'पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान' द्वारा अपनी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के 'साहित्य एवं विविध' अंक 27 का प्रकाशन किया जा रहा है। यह अंक संस्थान की रचनात्मक चेतना, संवेदनशीलता और मानवीय मूल्यों का सजीव प्रतिबिम्ब है तथा यह दर्शाता है कि कार्य के दायित्वों के साथ-साथ साहित्य और सृजनशीलता भी हमारे संस्थानगत जीवन का अभिन्न अंग है।

इस अंक में प्रकाशित लेख, कविताएँ, निबंध, कहानी यात्रा वृत्तांत आदि विचारात्मक रचनाएं मानवीय अनुभवों, सामाजिक सरोकारों और जीवन-मूल्यों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती हैं। साहित्य मन व हृदय को संवेदनशील बनाता है, विचारों को परिष्कृत करता है और कार्यक्षेत्र में संतुलन एवं सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करता है। यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि संस्थान के अधिकारी एवं कर्मचारी साहित्यिक अभिव्यक्ति में भी समान रूप से रुचि लेते हैं। विश्लेषिका का यह साहित्यिक अंक कार्य और भाव के संतुलन का सुन्दर उदहारण प्रस्तुत करता है।

मैं सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को इस उत्कृष्ट साहित्यिक अंक के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि पत्रिका भविष्य में भी रचनात्मकता को प्रोत्साहित करती रहेगी।

(दीपाक्षी शाह)

इच्छा शंकर शर्मा

वैज्ञानिक 'एफ'

एवं उपाध्यक्ष, राजभाषा कार्यान्वयन समिति



मुख्य संपादकीय

यह अत्यंत खुशी की बात है कि 'पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान' द्वारा अपनी गृह पत्रिका 'विश्लेषिका' के साहित्यिक अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। यह अंक संस्थान के सांस्कृतिक और बौद्धिक वातावरण को सशक्त रूप में अभिव्यक्त करता है तथा इसमें संकलित रचनाएं यह सिद्ध करती हैं कि साहित्य न केवल मनोरंजन का साधन है बल्कि वह विचार, विवेक और संवेदन का महत्वपूर्ण माध्यम भी है।

कार्यालयी कार्यों की व्यस्तता के बीच साहित्य-लेखन कार्मिकों को आत्मचिंतन और अनुभव अभिव्यक्ति का अवसर देता है तथा दृष्टि को व्यापक बनाता है। इस अंक में मुद्रित साहित्यिक रचनाएं निःसंदेह पाठकों के हृदय में मानवीय मूल्यों और सकारात्मक विचारों का विस्तार करेंगी। कार्मिकों द्वारा हिंदी भाषा में संवेदनात्मक ज्ञान को प्रस्तुत करना इस बात का प्रमाण है कि अपनी भाषा में रचनात्मक मौलिक लेखन से भावाभिव्यक्ति सरल, सहज और स्वाभाविक होती है।

आशा है कि साहित्य की विभिन्न विधाओं संबंधी यह लेखन कार्य पाठकों में नई उर्जा का संचार करेगा। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष तौर पर सहयोग देने वाले सभी कार्मिकों को बधाई और आगामी अंक के प्रति शुभकामनाएं।

इच्छा शंकर शर्मा

सुचित्रा चौधरी

वैज्ञानिक 'ई'

एवं राजभाषा अधिकारी



राजभाषा अधिकारी की कलम से

आपके समक्ष 'पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान' की वार्षिक गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के 'साहित्य एवं विविध' अंक 27 को प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत खुशी हो रही है। यह अंक राजभाषा हिंदी की सृजनात्मक शक्ति, सौन्दर्य और भावात्मक गहराई को उजागर करता है तथा इसमें प्रकाशित रचनाएं भाषा की प्रवाहमयता, संवेदनशीलता व अभिव्यक्ति की विविधता का उत्कृष्ट उदहारण है।

साहित्य लेखन के माध्यम से हिंदी केवल सम्प्रेषण की भाषा नहीं रहती अपितु वह भावनाओं, संस्कारों और सामाजिक चेतना की संवाहक भी बन जाती है। यह अंक हिंदी के प्रति आत्मीयता और रचनात्मक जुड़ाव को और अधिक प्रगाढ़ करता है। राजभाषा के रूप में हिंदी का सुदृढीकरण तभी संभव है जब उसके साहित्यिक पक्ष को भी समान रूप से प्रोत्साहन मिले। 'विश्लेषिका' का यह अंक इस दिशा में एक सार्थक प्रयास है जो संस्थान के कार्मिकों को संवेदनात्मक अभिव्यक्ति का सशक्त मंच प्रदान करता है।

मैं सभी रचनाकारों, संपादक मंडल और सहयोगियों के प्रति आभारी हूँ जिन्होंने इस साहित्यिक अंक को सुन्दर और प्रेरक बनाने में भरपूर सहयोग दिया।

सुचित्रा चौधरी
सुचित्रा चौधरी

अनुक्रमणिका

1. नारी सशक्तिकरण: अतीत से वर्तमान 01
—दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'बी'
2. कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य 05
—अवधेश कुमार गौतम, वैज्ञानिक 'ई'
3. खेलों का आर्थिक और सामाजिक महत्व 08
—मनीष कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
4. नारी सशक्तिकरण: अतीत से वर्तमान 10
—कपीश कुमार, वाहन चालक 'सी'
5. वैश्वीकरण और भारत के विदेशी सम्बन्ध 12
—चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'
6. मनोविज्ञान और तकनीक: डिजिटल युग में 14
—साहिल, तकनीशियन 'ए'
7. किपलिंग ट्रेल: मसूरी की ओर पदयात्रा 20
—अमित धवन, वैज्ञानिक 'जी'
8. स्त्री— चेहरा एक, रूप अनेक 22
—नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
9. वास्तविक अमीरी 23
—आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
10. मेले में अकेला 24
—नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
11. सफलता की मुस्कान 25
—विक्रम दत्त, वाहन चालक 'बी'
12. विकास की दौड़ 26
—अर्चना चौहान, एमटीएस
13. बन गए साइंटिस्ट जी 27
—अमित धवन, वैज्ञानिक 'जी'
14. दृष्टि 28
—अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'एफ'
15. गणित में जीवन या जीवन में गणित 29
—पूजा, वैज्ञानिक 'बी'

16.	प्रकृति बनाम मानवता: भूल से सुधार तक —नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'	31
17.	जनरल डिब्बा: चलती साँसों का ठिकाना —राजकुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'	33
18.	एक शपथ – हर माँ के लिए —चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'	34
19.	बेचारे पति जी —मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'	36
20.	वार्षिक रिपोर्ट 2025 (खेल गतिविधियाँ)	37
21	राजभाषा गतिविधियाँ	39
	बच्चों का कोना	
22.	स्वस्थ भोजन हैं एक वरदान बीमारियों से बचाए जान —आद्या, सुपुत्री नेहा अग्रवाल	47
23.	माँ —साएशा कुलश्रेष्ठ, सुपुत्री मान्या कुलश्रेष्ठ	48
24.	बच्चों की कलाकृतियाँ	49
25.	चित्र दीर्घा	51

नारी सशक्तिकरण: अतीत से वर्तमान

दीपिका शर्मा
तकनीकी अधिकारी 'बी'

“यत्र नार्यस्तु पूजयन्ते रमन्ते तत्र देवता।”

अर्थात्

जहाँ नारी की पूजा होती है वहाँ देवता निवास करते हैं।

प्रस्तावना

प्राचीन युग से हमारे समाज में नारी का विशेष स्थान रहा है। पौराणिक ग्रन्थों में नारी को पूजनीय व देवी तुल्य माना गया है। हमारी धारणा यही रही है कि जहाँ पर समस्त नारी जाति को प्रतिष्ठा व सम्मान की दृष्टि से देखा जाता है वहाँ देवता निवास करते हैं। कोई भी परिवार, समाज तथा राष्ट्र तब तक सच्चे अर्थों में प्रगति की ओर अग्रसर नहीं हो सकता है जब तक नारी के प्रति निरादर, भेदभाव व हीनभाव का त्याग नहीं करता है। महात्मा गांधी जी का भी मानना है कि 'स्त्री पुरुष की गुलाम नहीं, सहधर्मिणी, अर्धांगिनी और मित्र है।'

नारी का स्थान

जिस समाज में नारी का स्थान सम्मानजनक होता है वह उतना ही प्रगतिशील और विकसित होता है। जब समाज सशक्त और विकसित होता है तब राष्ट्र मजबूत होता है इस प्रकार एक सशक्त राष्ट्र निर्माण में नारी केंद्रीय भूमिका निभाती है। माता के रूप में एक नारी बालक की प्रथम गुरु होती है। किसी ने सही ही कहा कि 'एक अच्छी माता 100 शिक्षकों के बराबर होती है।'

भारत में महिला सशक्तिकरण

स्वाभाविक रूप से जब हम भारत में महिला सशक्तिकरण की बात करते हैं तो हमारा तात्पर्य यह होता है कि महिलाओं को अपने अधिकारों के बारे में जागरूक होना चाहिए जैसे वोट का अधिकार, संपत्ति का अधिकार, आवागमन की आजादी, उनके कानूनी अधिकार साथ ही और भी बहुत कुछ। महिलाओं को उनके आत्म-मूल्य, अपनी पसंद स्वयं तय करने की उनकी क्षमता का एहसास कराना और ऐसे समाज का निर्माण करना जहाँ महिलाएँ अन्य मनुष्यों की तरह अपने सम्मान और अधिकारों का आनंद ले सकें।

जब दुनिया में महिलाओं की आबादी को निर्दिष्ट करने की बात आती है तो हमें लगभग 50% का परिणाम मिलता है लेकिन भारत में असमानुपातिक लिंगानुपात है जिसका अर्थ है कि महिला जनसंख्या तुलनात्मक रूप से पुरुषों की तुलना में कम है। तुलनात्मक रूप से दुनिया का पश्चिमी भाग महिला सशक्तिकरण के बारे में बहुत उदार है। ऐसा माना जाता है कि साक्षरता, जनसंख्या और स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का समाधान तब तक नहीं होगा जब

तक लैंगिक भेदभाव का कोई समाधान नहीं निकलता। प्राचीनकाल से लेकर आधुनिक काल तक भारतीय समाज ने महिला सशक्तिकरण में कई उतार-चढ़ाव देखे हैं।

महिला सशक्तिकरण और भारतीय प्राचीन काल

भारतीय प्राचीन काल में महिलाओं को पुरुषों के बराबर माना जाता था, लिंग के आधार पर कोई भेदभाव नहीं था, इसके बजाय समाज महिलाओं को जननी मानता था। यहाँ तक कि हिंदू लिपियों में भी महिलाओं को देवी माना जाता है। वे अपने सभी मूल अधिकारों का आनंद लेती थीं जहाँ वे शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वतंत्र थीं। उस समय ऋषियों की पत्नियाँ अपने पतियों के साथ आध्यात्मिक गतिविधियों में भाग लेती थीं, उन्हें अर्धांगिनी के रूप में भी जाना जाता था—

**‘नारी तू नारापूणी तू ममता की खान
तू ही काली चण्डिका, सरस्वती का ज्ञान।’**

उस काल में महिलाओं को पुरुषों के समान ही जीवन जीने को मिला। भारतीय इतिहास में महिलाओं ने अपना जीवन दो चीजों से गुजरते देखा है। एक है अधीनता और दूसरी मुक्ति। समय बदलने के साथ उनकी स्थिति बदल गई परंतु वैदिक युग में वे नश्वरता और आदर्शों की रक्षक थीं।

गार्गी, मैत्रेयी, सीता और द्रोपती की उपलब्धियाँ इस युग की महिलाओं के लिए सबसे आदर्श भूमिकाएँ साबित होती हैं। ये महिलाएँ कई क्षेत्रों में पुरुषों से प्रतिस्पर्धा करती थीं, उन्हें अधिकार और समानता प्राप्त थी। अपनी संतान के मार्गदर्शन में भी उनकी भूमिका बहुत प्रभावशाली थी।

मध्यकाल में भारत में महिला सशक्तिकरण

प्रारंभिक वैदिक काल में स्त्री-पुरुषों की बीच एकता के लिए जगह थी लेकिन उत्तर वैदिक काल में उनके बीच समानता में गिरावट आई। उस युग में महिलाओं की स्थिति में गिरावट का मुख्य कारण विदेशी विजय थी। निष्पक्षता और सद्भाव के ऋग्वैदिक आदर्शों का क्षरण हुआ जिसने महिलाओं को वेदों का अध्ययन करने, वैदिक मंत्रों का पाठ करना और वैदिक अनुष्ठानों का पालन करने के अधिकार से वंचित कर दिया। एक समय ऐसा भी आया जब महिलाओं को पर्दाप्रथा, सतीप्रथा, जोहर, लड़कियाँ का शिक्षा निषेध, विधवा-विवाह निषेध, बाल-विवाह जैसे कुरीतियों का सामना करना पड़ा।

- **सती प्रथा:** सती प्रथा की यह अवधारणा है कि जब किसी महिला के पति की मृत्यु हो जाती है तो उसे अपने पति के साथ जलती हुई आग में बैठकर स्वयं जलकर मर जाना पड़ता है।
- **जौहर:** यह एक सामूहिक आत्महत्या है जिसमें राजपूत महिलाएँ अपने प्राणों की आहुति दे देती थीं जब वे युद्ध में हारने वाले होते थे।
- **विधवा-विवाह निषेध:** मध्यकाल में विधवा-विवाह की अनुमति नहीं थी। विधवा के लिए किसी भी पवित्र अनुष्ठान में स्थान नहीं था। उसे घर की हर सुख सुविधा का त्याग करना पड़ता है।
- **शिक्षा निषेध:** महिलाओं के लिए कोई शिक्षा नहीं थी। अतीत में वैदिक महिलाओं की शिक्षा तक पहुँच थी लेकिन उत्तर वैदिक काल में परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। उन्हें सभी घरेलू कार्य सिखाए जाने लगे। कुल मिलाकर मध्यकाल में महिलाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।

आधुनिक काल में महिला सशक्तिकरण

समय के साथ समाज में बदलाव आए और किसी न किसी तरह महिलाओं को अपने अधिकारों और शक्तियों का आनंद लेने का मौका मिला परंतु यह समाज की हर महिला के लिए उपलब्ध नहीं था। भारत में ईस्ट इंडिया कंपनी के दौरान आधुनिक काल की शुरुआत में कई नाम सामने आते हैं। बेगम हजरत महल, उदादेवी पासी, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई जैसी असाधारण बहादुर महिलाएँ थीं। धीरे-धीरे भारत में महिला सशक्तिकरण की यह लड़ाई जोर पकड़ती गई। सामाजिक सुधार हुए और राजा राममोहन राय, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद और स्वामी दयानंद सरस्वती जैसे पुरुषों ने भाग लिया। इन सभी ने महिलाओं को समाज में उनका पुराना दर्जा वापस दिलाने में मदद की।

इस सशक्तिकरण की उत्पत्ति और अवधारणा 1960 में संयुक्त राज्य अमेरिका के नागरिक अधिकार आंदोलनों में सामने आई थी। पिछले कुछ सहस्राब्दियों में भारत में महिलाओं की स्थिति में काफी बदलाव आया है। ब्रिटिश शासकों और इंग्लैंड तथा यूरोप के अन्य हिस्सों से आए मिशनरियों की गतिविधियों ने भारत के सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन में कुछ बदलाव किया। मिशनरी, महिला शिक्षा के पक्षधर थे उन्होंने कलकत्ता, बंबई और मद्रास में लड़कियों के लिए स्कूल स्थापित किए। महिलाओं की शिक्षा के लिए विभिन्न शिक्षा समितियों की सिफारिश की गई। 1854 में शिक्षा प्रेषण में, महिला शिक्षा पर भारी दबाव बनाया गया परिणामस्वरूप कई बालिका विद्यालय स्थापित किए गए—

“शिक्षा बेटी का है अधिकार, बढ़ाओ कदम और करो विचार”

स्वतंत्रता के बाद में भारत में महिला सशक्तिकरण

भारतीय स्वातंत्र्योत्तर युग में महिला सशक्तिकरण के आंदोलन धीमे पड़ गए। बहुत-सी महिलाएँ अपने घरों को लौट गईं क्योंकि उन्हें उपनिवेशवादियों के खिलाफ लड़ने की जरूरत नहीं थी। अन्य महिलाएँ इस बात से संतुष्ट थी कि परिषद ने उन्हें समानता का वादा किया, समान नागरिक संहिता (अनुच्छेद 44) की आशा जगाई और सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार दिया। इससे उत्पीड़न, भेदभाव, दहेज-हत्या, बेरोजगारी, घटता लिंगानुपात, स्वास्थ्य-सेवा का अभाव और शिशु मृत्युदर में वृद्धि हुई। पूरे भारत में सामाजिक राजनीतिक अशांति थी परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्र द्वारा सीडब्ल्यूआई की नियुक्ति की गई।

महिलाओं के विरुद्ध सभी प्रकार के भेदभाव के उन्मूलन हेतु सीईडीडब्ल्यू संयुक्त राष्ट्र संगठन की सबसे महत्वपूर्ण पहलों में से एक है। यह महिलाओं के विरुद्ध हिंसा और भेदभाव का विरोध करता है और महिलाओं को कानूनी व राजनीतिक समानता बहाल करने का वादा करता है। महिलाओं को सशक्त बनाने का यह प्रयास 1940 के दशक में शुरू हुआ था।

राजनीति और अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका

भारत में महिला सशक्तिकरण का सबसे प्रभावी और महत्वपूर्ण चरण है राजनीति और अर्थव्यवस्था में महिलाओं की भूमिका। इतने सारे सुधारों, अधिनियमों और कानूनों के कार्यान्वयन के बाद आखिरकार महिलाओं को राजनीतिक रूप से खुद का प्रतिनिधित्व करने का मौका मिला। महिलाओं के राजनीतिक सशक्तिकरण को उनके वास्तविक सशक्तिकरण में बदलना बहुत मुश्किल काम था क्योंकि स्थानीय निकायों में महत्वपूर्ण संख्या में महिलाओं

के अस्तित्व के बावजूद, विधायिका में महिलाएँ अभी भी लैंगिक हिंसा की चपेट में हैं। महिलाओं की राजनीतिक भूमिकाओं के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण में बहुत कम बदलाव आया। 2011 में 'कार्यस्थल पर यौन उत्पीड़न के विरुद्ध महिलाओं का संरक्षण विधेयक' को शामिल किया गया।

भारत में अर्थव्यवस्था और महिला सशक्तिकरण की अवधारणाएँ एक-दूसरे पर निर्भर हैं। भारत के आर्थिक विकास में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका है। वे कई दशकों से बंधुआ मजदूरी के रूप में इसमें भाग ले रही हैं और उन्हें वेतन मिलता है। लगभग सभी देशों में, राष्ट्रीय आय लेखांकन में राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि में महिलाओं के योगदान को आज भी अनदेखा किया जाता है।

महिलाएँ, देश के राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक जीवन में बहुत बड़ा योगदान देती हैं। इसलिए आर्थिक विकास, संसाधनों पर महिलाओं के नियंत्रण और निर्णय लेने की प्रक्रिया में उनकी भागीदारी पर सकारात्मक प्रभाव डाल सकता है लेकिन वास्तविकता यह है कि महिलाएँ आर्थिक दबाव का सामना करती हैं। किन्तु अब आधुनिक समय में, भारत में महिला सशक्तिकरण के तरीके ने पहले की तुलना में बहुत कुछ बदल दिया है। उन्होंने स्वयं सहायता समूह शुरू किए हैं, कारखानों में काम किया है और अपना खुद का व्यवसाय शुरू किया है 'श्री महिला गृह उद्योग लिज्जत पापड़' इसका एक अच्छा उदाहरण है। यह पहला पापड़ व्यवसाय था जिसे महिलाओं के एक संगठन द्वारा संचालित और संगठित किया गया। जहाँ वे अपने सुविधाजनक स्थानों पर पापड़ सुखाती थीं और साथ मिलकर पापड़ बेचती थीं।

इसके अतिरिक्त भारत में महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार द्वारा कई कानून और अधिनियम लागू किए गए। भारतीय सरकार द्वारा 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', उज्ज्वला योजना, महिला शक्ति केंद्र, महिला हेल्पलाइन सुविधा, पंचायत में महिला आरक्षण इत्यादि योजनाएँ चलाई गईं। महिला सुरक्षा व सशक्तिकरण हेतु सरकार द्वारा कुछ प्रमुख अधिनियम भी पास कराए गए जैसे कि दहेज रोक 1961 अधिनियम, एक बराबर पारिश्रामिक एक्ट 1976, लिंग परीक्षण तकनीक एक्ट 1994, बाल विवाह रोकथाम एक्ट 2006, कार्यस्थल पर महिलाओं का यौन शोषण एक्ट 2023 इत्यादि।

निष्कर्ष: आज अगर हमारे देश और हमारे समाज को सही मायने में तरक्की करनी है तो महिलाओं के साथ भेदभाव को पूर्ण रूप से समाप्त करना होगा। महिलाओं को हर एक क्षेत्र में उचित अवसर प्रदान करने होंगे जिससे कि वह अपना संपूर्ण विकास कर सकें और आत्मनिर्भर बन सकें। परिवारों में जितनी खुशी बेटे के जन्म पर घर में मनाई जाती है उतनी ही बेटे के जन्म पर मनाई जाए तो शायद देश को महिला सशक्तिकरण जैसे अभियानों की आवश्यकता ही ना पड़े। इस संबंध में सावित्री बाई फुले ने ठीक ही कहा है कि "स्त्रियों को न देवी मानने की जरूरत है और न पूजने की, बल्कि स्त्री का सम्मान करना और बराबरी का अधिकार देना जरूरी है।"



कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य

अवधेश कुमार गौतम
वैज्ञानिक 'ई'

प्रस्तावना

विज्ञान ने सदियों से मानव जीवन को नई ऊँचाइयों पर पहुँचाने का कार्य किया है। पहिए के आविष्कार से लेकर इंटरनेट तक, हर खोज ने इंसान की राह आसान की है। इन्हीं खोजों की शृंखला में आज का सबसे बड़ा और चर्चित आविष्कार है **कृत्रिम बुद्धिमत्ता**। यह वह तकनीक है जो मशीनों को इंसानों की तरह सोचने, समझने और निर्णय लेने की क्षमता देती है। आज एआई केवल कल्पना तक सीमित नहीं है बल्कि यह हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा बन चुका है। मोबाइल के वॉइस सहायक, सोशल मीडिया के रिकर्मेंडेशन, अस्पतालों की रोबोटिक सर्जरी और गाड़ियों का स्वचालित चलना, ये सब एआई की देन हैं।

“विज्ञान ने चमत्कार दिखा दिए हैं, मशीनों को भी विचार दे दिए हैं।”

1. कृत्रिम बुद्धिमत्ता का स्वरूप और परिभाषा

कृत्रिम बुद्धिमत्ता वह विज्ञान है जिसमें कंप्यूटर और मशीनों को इस प्रकार प्रोग्राम किया जाता है कि वे इंसानों की तरह अनुभव से सीख सकें, नई परिस्थितियों में ढल सकें और स्वतः निर्णय ले सकें।

- **मशीन लर्निंग:** इसमें कंप्यूटर डेटा से सीखता है और पैटर्न पहचानता है।
- **डीप लर्निंग:** यह मशीन लर्निंग की उन्नत तकनीक है जिसमें न्यूरल नेटवर्क का उपयोग होता है।
- **रोबोटिक्स:** इसमें एआई को मशीनों के साथ जोड़कर कार्य करवाए जाते हैं।

‘तकनीक से बदल रही है हर राह, अब इंसान के संग चल रही है निगाह।’

2. वास्तविक जीवन में कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग

- **चिकित्सा:** आज एआई डॉक्टरों का सबसे बड़ा सहायक बन चुका है। IBM Watson जैसे प्लेटफॉर्म बीमारियों का विश्लेषण कर सही इलाज सुझाते हैं। रोबोटिक सर्जरी जटिल ऑपरेशनों को आसान बना रही है। कोविड-19 महामारी के दौरान एआई ने वैक्सीन खोज और रोग की ट्रैकिंग में अहम भूमिका निभाई।

‘दवा की तलाश में जो था मुश्किल, एआई ने कर दिया उसे भी आसान।’

- **शिक्षा:** स्मार्ट क्लासरूम में आभासी अध्यापक बच्चों की व्यक्तिगत क्षमता के अनुसार पढ़ाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा मंच जैसे Coursera और Byju एआई का उपयोग कर विद्यार्थियों को सुझाव देते हैं। कमजोर छात्रों

को विशेष सामग्री उपलब्ध कराना भी एआई की उपलब्धि है।

- **परिवहन:** टेस्ला और गूगल ने स्वचालित कारें बनाकर यातायात को सुरक्षित बनाने की दिशा में बड़ा कदम उठाया है। एआई ट्रैफिक नियंत्रण और नेविगेशन प्रणाली में भी सहायक है।
- **उद्योग और व्यापार:** फैक्ट्रियों में रोबोट मशीनों से उत्पादन क्षमता कई गुना बढ़ी है। ई-कॉमर्स कंपनियों जैसे अमेजन ग्राहकों को उनकी पसंद के अनुसार सुझाव देती हैं। बैंकिंग क्षेत्र में धोखाधड़ी पहचानने और डिजिटल सुरक्षा में भी एआई काम कर रहा है।

‘मशीनें जब सोचने लगीं, उद्योग की दुनिया बदलने लगीं।’

- **दैनिक जीवन:** गूगल मैप्स पर रास्ता ढूँढना, नेटफ्लिक्स पर पसंदीदा फिल्में सुझाना या फिर स्मार्ट गृह उपकरण ये सब एआई की बदौलत ही है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एआई से तय करते हैं कि हमें कौन-सी पोस्ट पहले दिखेगी।

3. कृत्रिम बुद्धिमत्ता के लाभ

- **समय और श्रम की बचत:** जहाँ इंसान को घंटों लगते हैं वहाँ मशीनें सेकंडों में काम पूरा कर देती हैं।
- **मानव त्रुटियों में कमी:** एआई मशीनें इंसानों की गलतियों से मुक्त होती हैं।
- **नवीन खोजों की संभावना:** अंतरिक्ष, समुद्र और चिकित्सा जैसे क्षेत्रों में नई खोजें संभव हो रही हैं।

‘रफ्तार मिली सोच को, मशीनों ने थाम लिया हाथ।’

4. चुनौतियाँ और खतरे

- **बेरोजगारी की समस्या:** जब मशीनें इंसानी काम करेंगी तो रोजगार के अवसर कम होंगे।
उदाहरण: ऑटोमेशन की वजह से फैक्ट्रियों में मजदूरों की जरूरत घट रही है।
- **निजता और सुरक्षा:** एआई आधारित एप्लिकेशन हमारे डेटा का उपयोग करते हैं जिससे निजी जानकारी खतरे में पड़ सकती है।
- **नैतिक प्रश्न:** यदि कोई एआई आधारित हथियार गलत हाथों में चला जाए तो यह मानवता के लिए घातक हो सकता है।
- **नियंत्रण का संकट:** वैज्ञानिकों को डर है कि अगर मशीनें इंसानों से ज्यादा बुद्धिमान हो गईं तो है मानव पर हावी हो सकती हैं।

‘सपनों के साथ साए भी चलते हैं, तरक्की के साथ खतरे भी पलते हैं।’

5. भविष्य की संभावनाएँ

- **स्मार्टसिटी:** बिजली, पानी, यातायात और सुरक्षा सब कुछ एआई से नियंत्रित होगा।
- **पर्यावरण संरक्षण:** जलवायु परिवर्तन की समस्या को समझने और हल करने में एआई अहम होगा।
- **अंतरिक्ष खोज:** मंगल और चंद्रमा पर जीवन की खोज में एआई रोबोटों का उपयोग बढ़ेगा।

- **सैन्य और साइबर सुरक्षा:** एआई सैन्य उद्देश्यों के लिए स्वायत्त हथियार प्रणालियों और रोबोटों के विकास को सक्षम बनाएगा। यह पूर्वानुमानित खतरा विश्लेषण और रोकथाम प्रणालियों जैसी तकनीकों के माध्यम से साइबर सुरक्षा को मजबूत करने में भी मदद करेगा।
- **परिवहन:** स्वचालित वाहन, तकनीकी क्षेत्र में सबसे अभूतपूर्व उपलब्धियों में से एक है। एआई यातायात प्रबंधन और भीड़भाड़ का पूर्वानुमान लगाने में भी मदद करेगा ताकि यात्रा का समय कम से कम हो, वाहनों के प्रदर्शन पर नजर रखी जा सके और समय पर मरम्मत और रखरखाव सुनिश्चित किया जा सके।
- **वित्त:** एआई एल्गोरिदम पहले से ही स्टॉक ट्रेडिंग और निवेश निधि प्रबंधन में लागू हैं। चूंकि वे भारी मात्रा में डेटा का विश्लेषण कर सकते हैं, एआई सिस्टम वित्तीय निर्णय लेने में मनुष्यों से बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। वित्तीय उद्योग को जोखिम और अनुपालन प्रबंधन से लाभ होगा क्योंकि एआई वित्तीय आपदाओं को रोकने में मदद करता है।
- **व्यक्तिगत जीवन:** हर व्यक्ति को उसके अनुसार सुविधाएँ, स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा उपलब्ध होंगी।
- **विज्ञापन देना:** एआई व्यक्तिगत उपयोगकर्ताओं की विशिष्ट रुचियों, व्यवहारों, स्थानों और प्रोफाइलों के आधार पर उनके लिए अनुकूलित वैयक्तिकृत विज्ञापन सक्षम करेगा जिससे लक्ष्यीकरण और प्रभावशीलता में सुधार होगा।
- **आर्थिक प्रभाव:** भविष्य में, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, डेटा विश्लेषण के माध्यम से दक्षता बढ़ाकर और निर्णय लेने की क्षमता में सुधार करके उत्पादकता और आर्थिक विकास का इंजन बनेगी। यह नए उत्पादों, सेवाओं, बाजारों और उद्योगों को जन्म दे सकती है और राजस्व के नए स्रोत पैदा कर सकती है। एक उल्लेखनीय अध्ययन का निष्कर्ष है कि 2030 तक विश्व के सकल घरेलू उत्पाद पर कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आर्थिक प्रभाव में 14% की वृद्धि हो सकती है।

‘जहाँ इंसान थक जाए, वहाँ मशीनें थाम लेंगी, भविष्य की हर मुश्किल को आसान बना देंगी।’

उपसंहार

कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक अद्भुत वरदान है लेकिन यह तभी उपयोगी है जब इसे मानवीय मूल्यों और नैतिकता के साथ विकसित किया जाए। एआई न तो पूरी तरह वरदान है और न ही अभिशाप, यह केवल एक साधन है। इसका भविष्य इस बात पर निर्भर करता है कि इंसान इसे किस दिशा में ले जाता है।

‘कृत्रिम बुद्धिमत्ता है उजाले की किरण, इसे संभालो तो बनेगा स्वर्णिम भविष्य कारण।’



खेलों का आर्थिक और सामाजिक महत्व

मनीष कुमार श्रीवास्तव
वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

खेल मानव जीवन का एक जीवंत और प्रेरक हिस्सा हैं, जो न केवल शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देते हैं बल्कि समाज और अर्थव्यवस्था को भी गतिशील बनाते हैं। आधुनिक युग में खेलों का आर्थिक और सामाजिक महत्व स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है क्योंकि ये व्यक्तिगत विकास, सामाजिक एकता और आर्थिक प्रगति के लिए उत्प्रेरक का काम करते हैं। इस निबंध में खेलों के इन पहलुओं को जीवंत उदाहरणों के साथ विस्तार से समझाया गया है।

आर्थिक महत्व

खेल उद्योग आज एक वैश्विक आर्थिक शक्ति है जो रोजगार, पर्यटन और व्यापार को बढ़ावा देता है। बड़े खेल आयोजन अर्थव्यवस्था को नई ऊर्जा प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, 2012 लंदन ओलंपिक ने यूके की अर्थव्यवस्था में लगभग 13.5 बिलियन पाउंड का योगदान दिया जिसमें स्टेडियम निर्माण, पर्यटन और स्थानीय व्यवसायों को भारी लाभ हुआ। भारत में इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) ने क्रिकेट को एक आर्थिक पावरहाउस बना दिया है। 2023 में आईपीएल ने 11.5 बिलियन डॉलर का ब्रांड मूल्य हासिल किया जिससे न केवल क्रिकेटर्स जैसे विराट कोहली और रोहित शर्मा को आर्थिक सफलता मिली बल्कि स्टेडियम कर्मचारी, टिकट विक्रेता और स्ट्रीट फूड विक्रेताओं तक को रोजगार मिला। प्रायोजक जैसे स्टार स्पोर्ट्स, जियो और बायजूस ने भी इससे अत्यधिक मुनाफा कमाया।

खेल उपकरण और परिधान उद्योग भी आर्थिक विकास का एक प्रमुख स्रोत है। उदाहरण के लिए, जालंधर, पंजाब में निर्मित हॉकी स्टिक और क्रिकेट गेंदें न केवल भारत में बल्कि वैश्विक बाजार में भी लोकप्रिय हैं परिणामस्वरूप स्थानीय कारीगरों और छोटे व्यवसायों को लाभ होता है। अंतरराष्ट्रीय ब्रांड जैसे प्यूमा और अंडर आर्मर भी खेलों की लोकप्रियता के कारण भारत में अपनी उपस्थिति बढ़ा रहे हैं। खेल पर्यटन भी अर्थव्यवस्था को गति देता है। 2019 में भारत में आयोजित कबड्डी विश्व कप ने विदेशी पर्यटकों को आकर्षित किया और अहमदाबाद के होटल तथा स्थानीय टैक्सी सेवाओं को काफी लाभ हुआ। इसके अलावा, भारत में योग और फिटनेस सेंटर जैसे गोल्ड्स जिम व कल्ट फिट का तेजी से विस्तार हुआ है जो युवाओं को रोजगार एवं स्वस्थ जीवनशैली प्रदान कर रहा है।

सामाजिक महत्व

खेल सामाजिक एकता और सांस्कृतिक गौरव का प्रतीक हैं। भारत में क्रिकेट एक ऐसा खेल है जो हर वर्ग और समुदाय को एकजुट करता है। 2007 में टी20 विश्व कप में भारत की जीत ने मुंबई से लेकर कोलकाता तक

सड़कों पर उत्सव का माहौल बनाया जिससे राष्ट्रीय एकता को मजबूती मिली। इसी तरह मणिपुर में आयोजित पोलो जैसे पारंपरिक खेल और केरल की नौका दौड़ स्थानीय संस्कृति को जीवंत रखते हुए सामुदायिक बंधन को बढ़ाते हैं।

खेल, युवाओं में नेतृत्व और आत्मविश्वास विकसित करते हैं। उदाहरण के लिए, बैडमिंटन स्टार साइना नेहवाल ने हैदराबाद के छोटे से शहर से निकलकर वैश्विक मंच पर भारत का नाम रोशन किया जिसने लाखों लड़कियों को खेलों में करियर बनाने के लिए प्रेरित किया। भारत सरकार की 'खेलो इंडिया' पहल ने ग्रामीण क्षेत्रों में खेल सुविधाओं को बढ़ाया है। उदाहरण के लिए, झारखंड के आदिवासी क्षेत्रों में तीरंदाजी प्रशिक्षण केंद्रों ने दीपिका कुमारी जैसे खिलाड़ियों को उभारा, जो आज वैश्विक स्तर पर भारत का प्रतिनिधित्व करती हैं।

खेल सामाजिक समस्याओं को कम करने में भी महत्वपूर्ण हैं। दिल्ली और मुंबई जैसे शहरों में फुटबॉल अकादमियों ने स्लम क्षेत्रों के बच्चों को नशे और अपराध से दूर रखा है। महिलाओं के सशक्तिकरण में भी खेल अहम भूमिका निभाते हैं। कुश्ती खिलाड़ी गीता और बबीता फोगाट ने हरियाणा जैसे रूढ़िवादी क्षेत्र में लैंगिक बाधाओं को तोड़ा, जिसकी कहानी 'दंगल' फिल्म ने दुनिया भर में प्रेरणा दी।

निष्कर्ष

खेल मनोरंजन से कहीं अधिक हैं ये आर्थिक और सामाजिक प्रगति के जीवंत साधन हैं। ये रोजगार, व्यापार, और पर्यटन के माध्यम से अर्थव्यवस्था को गति देते हैं साथ ही एकता, सशक्तिकरण और स्वास्थ्य को बढ़ावा देकर समाज को समृद्ध करते हैं। भारत जैसे विविधता वाले देश में खेलों को और अधिक प्रोत्साहन देना आवश्यक है ताकि यह समाज के हर कोने को प्रेरित और सशक्त कर सकें। खेलों के माध्यम से एक स्वस्थ, एकजुट और समृद्ध समाज का निर्माण संभव है।



नारी सशक्तिकरण: अतीत से वर्तमान

कपीश कुमार
वाहन चालक 'सी'

महिलाओं को उनके उचित अधिकार देना उन्हें सशक्त बनाने और उनके जीवन को बेहतर बनाने का एक तरीका है। भारत की पौराणिक कथाएं महिलाओं को देवी का दर्जा देती हैं। नारी समाज का आधार है, वह केवल जीवन देने वाली नहीं बल्कि परिवार, समाज और राष्ट्र की संस्कृति की संरक्षक भी है। भारतीय संस्कृति में नारी को 'शक्ति' और 'मातृस्वरूपा' माना गया है। महिलाओं को शिक्षा, आर्थिक स्वतंत्रता, सामाजिक समानता और राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से सशक्त बनाना है ताकि वे अपने जीवन के निर्णय स्वयं ले सकें। बेटे बचाओ, बेटे पढ़ाओ और स्वयं सहायता समूहों द्वारा भारत ने नारियों के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। भारत के इतिहास से लेकर वर्तमान तक नारी की स्थिति में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं। जिसके चलते कभी उसे विदुषी रूपी सम्मानित स्थान मिला तो कभी वह रूढ़िवादिता और पराधीनता का शिकार बनी। आधुनिक युग में नारी सशक्तिकरण न केवल सामाजिक न्याय का प्रश्न है बल्कि राष्ट्र के विकास का आधार भी है। जिस समाज में, स्त्रियाँ मजबूत और आत्मनिर्भर होती हैं वही समाज सच्ची प्रगति करता है। अतीत से वर्तमान की यात्रा नारी सशक्तिकरण की गाथा को स्पष्ट रूप से दर्शाती है।

महिलाएं अपनी प्रतिभा को निखारकर तथा अपनी रोजगार क्षमता बढ़ाकर आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बन सकती हैं। महिलाओं की शिक्षा व कौशल विकास के लिए नीति द्वारा सरकारी व गैर-सरकारी सहायता दी जाए ताकि वे रोजगार पा सकें या अपना-अपना व्यवसाय शुरू कर सकें जिससे नारी आर्थिक सशक्तिकरण का विकास होगा। नारी सशक्तिकरण की सभी कोशिश तभी सफल होंगी जब नारी अपने परिवार व खुद को स्वतंत्र रूप से सहारा देना सीख लेगी।

राजनीतिक सशक्तिकरण सरकारी कामों व निर्णय लेने में महिलाओं की सहायता का उल्लेख करता है। पंचायतों में 33% आरक्षण ने ग्रामीण स्तर पर महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित की। संसद और विधानसभाओं में भी महिला प्रतिनिधित्व बढ़ाने के लिए 'महिला आरक्षण विधेयक' लाया गया।

प्राचीन भारत में नारी को ऊँचा स्थान प्राप्त था वैदिक काल की नारियाँ शिक्षित, स्वतंत्र और समाज के अनेक क्षेत्रों में कार्यरत थीं। गार्गी, मैत्रेयी, अपाला, लोपामुद्रा जैसी विदुषी स्त्रियां वेद-वेदांगों की ज्ञाता थीं। वे शिक्षा, धर्म और राजनीति में सक्रिय भागीदारी निभाती थीं। स्वयंवर प्रथा द्वारा स्त्रियों को अपना-अपना जीवनसाथी चुनने का स्वतंत्र अधिकार था। धार्मिक अनुष्ठानों में भाग लेने का अधिकार था। उस समय नारी और पुरुष दोनों को बराबर माना जाता था।

मध्यकाल में नारी की स्थिति कमजोर होती गई। परंपरागत मान्यताओं मर्दा प्रथा, बहुपत्नी प्रथा, दहेज-प्रथा, बाल-विवाह और सती-प्रथा जैसी कुरीतियों ने नारियों को बंधनों में बाँध दिया तथा शिक्षा व स्वतंत्रता उनसे छीन ली गयी। शिक्षा और स्वतंत्रता से वंचित होना समाज में असमानता और पिछड़ेपन का कारण बना। नारियां घर की चार दीवारी तक सीमित होकर रह गयीं। वे अपनी इच्छानुसार जीवन नहीं जी पाती थीं। फिर भी अनेक वीरांगनाओं ने अपनी वीरता और साहस का परिचय दिया। रजिया सुल्तान (दिल्ली की पहली महिला शासक

बनी), महारानी दुर्गावती (गोंडवाना की शासक, जिन्होंने अकबर की सेना से वीरतापूर्वक युद्ध किया और मुगल सेना के घेरने पर अपनी ही कटार से आत्महत्या की), झांसी की रानी लक्ष्मीबाई (1857 के स्वतंत्रता संग्राम की अमर वीरांगना), अहिल्याबाई होल्कर, झलकारी बाई व रजिया सुल्ताना ने अपने साहस और नेतृत्व से इतिहास में नाम दर्ज किया। इन वीरांगनाओं ने यह प्रमाणित किया कि यदि अवसर मिले तो नारी पुरुषों के बराबर ही नहीं, बल्कि कई बार उनसे बढ़कर भी सिद्ध हो सकती हैं।

अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी में सामाजिक सुधार आंदोलनों ने महिलाओं की दशा बदलने की दिशा में जोर दिया। राजा राममोहन राय ने सतीप्रथा के विरुद्ध आवाज उठाई, ईश्वरचंद्र विद्यासागर ने विधवा पुनर्विवाह व महिला शिक्षा का समर्थन किया, स्वामी दयानंद सरस्वती, ज्योतिबा फुले और उनकी पत्नी सावित्रीबाई फुले ने महिला शिक्षा का प्रचार किया। ज्योतिबा फुले और सावित्रीबाई फुले ने कन्या शिक्षा का बीड़ा उठाया और पुणे के भिड़े बाड़ा में देश का पहला कन्या स्कूल खोला।

इसी बीच **स्वतंत्रता संग्राम में महिलाओं को नई पहचान** मिली। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम में नारियों की भागीदारी सुनिश्चित कराई। इस दौर से महिलाओं के अधिकारों और उनकी शिक्षा को लेकर समाज में जागृति आई। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सरोजिनी नायडू (भारत कोकिला, जिन्होंने सत्याग्रह आंदोलनों का नेतृत्व किया), अरुणा आसफ अली (1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की नेता), कस्तूरबा गाँधी (1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में उन्हें गिरफ्तार किया गया), उषा मेहता (भूमिगत रेडियो चलाकर अंग्रेजों के खिलाफ प्रचार), एनी बेसेंट (होमरूल आंदोलन की प्रमुख नेता) आदि ने अपना जीवन भारतीय स्वतंत्रता के लिए समर्पित कर दिया। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन ने नारी को सशक्त बनाने में बड़ी भूमिका निभाई तथा नारी को केवल घर तक सीमित रखने की सोच टूटने लगी।

1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत के संविधान ने महिलाओं को विशेष अधिकार दिए। अनुच्छेद 14 (सभी के लिए समानता), अनुच्छेद 15 (लिंग के आधार पर भेदभाव का निषेध), अनुच्छेद 16 (रोजगार में समान अवसर), अनुच्छेद 51.अ (वैज्ञानिक दृष्टिकोण व समानता को बढ़ावा देना), 13वें और 74वें संविधान संशोधन के तहत पंचायत और नगर निकायों में महिलाओं को आरक्षण मिला। स्वतंत्र भारत के संविधान में नारी को कानूनी सुरक्षा दी, जिससे वह जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़ सके।

आज की नारी केवल परिवार तक सीमित नहीं है बल्कि राजनीति, विज्ञान, खेल, सहित्य, सेना, फिल्म, व्यापार और अंतरिक्ष तक हर क्षेत्र में अपनी पहचान बना रही है। इंदिरा गांधी ने प्रधानमंत्री बनकर, निर्मला सीतारमण पूर्णकालिक रक्षा मंत्री व वित्त मंत्री बनकर, कल्पना चावला व सुनीता विलियम्स ने अंतरिक्ष में जाकर, साइना नेहवाल, पीवी सिंधु व मैरी कॉम ने खेल जगत में, प्रतिभा पाटिल ने राष्ट्रपति बनकर और किरण वेदी ने IPS अधिकारी (1972) बनकर नयी पहचान बनाई और नारी शक्ति की मिसाल बनीं।

नारी सशक्तिकरण की राह में कई चुनौतियाँ मौजूद हैं दहेज प्रथा, घरेलू हिंसा, भेदभाव, अशिक्षा और कार्यस्थलों पर असमानता आज भी महिलाओं को प्रभावित करती हैं। ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में स्थिति और भी चिंताजनक है। इन चुनौतियों से लड़ने के लिए कठोर नियम-कानून बनाने होंगे तथा उनका सख्ती से पालन करना होगा। नारी शिक्षा को प्राथमिकता देनी होगी, बेटियों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना होगा और पुरुष मानसिकता में बदलाव लाना होगा।

नारी सशक्तिकरण केवल महिलाओं की प्रगति नहीं बल्कि पूरे समाज और राष्ट्र की प्रगति है। अतीत में नारी को देवी का स्थान मिला, फिर मध्यकाल में शोषण झेला और स्वतंत्रता संग्राम ने नई राह दिखाई। आज महिलाएँ हर क्षेत्र में अपनी क्षमता सिद्ध कर रही हैं। वास्तविक सशक्तिकरण तब होगा जब हर महिला शिक्षित, आत्मनिर्भर और सुरक्षित होगी। **नारी समाज की रीढ़ है तथा राष्ट्र तभी प्रगति करेगा जब नारी सशक्त होगी।**



वैश्वीकरण और भारत के विदेशी सम्बन्ध

चित्रा कुशवाहा
वैज्ञानिक 'बी'

1. प्रस्तावना

आज के तकनीकी प्रगति और सूचना क्रान्ति के युग ने पूरे विश्व को एक मंच पर ला दिया है। यह स्थिति वैश्वीकरण कहलाती है। वैश्वीकरण ने देशों के बीच न केवल आर्थिक सम्बन्धों को गहरा किया है बल्कि राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रिश्तों को भी नया आयाम प्रदान किया है। भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश के लिये यह प्रक्रिया अत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्ध हुई है। भारत के विदेशी सम्बन्धों में वैश्वीकरण का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

2. वैश्वीकरण का अर्थ एवं आवश्यकता – वैश्वीकरण का शाब्दिक अर्थ है— पूरे विश्व को सांझा इकाई के रूप में देखना। इसका उद्देश्य यह है कि वस्तुएं, सेवाएं, पूंजी, तकनीक, विचार और संस्कृति किसी भी देश से अन्य किसी देश में स्वतन्त्र रूप से प्रवाहित हो सकें। आज कोई भी देश अकेले प्रगति नहीं कर सकता इसीलिए अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग आवश्यक है। वैश्वीकरण ने विश्व को एक वैश्विक गांव में बदल दिया है।

3. भारत में वैश्वीकरण की पृष्ठभूमि – भारत में वैश्वीकरण की शुरुआत 1991 में हुई। जब आर्थिक उदारीकरण, निजीकरण और खुली अर्थव्यवस्था की नीतियां अपनायी गयीं। विदेशी पूंजी निवेश और आयात-निर्यात को प्रोत्साहन मिलने लगा। भारतीय बाजार विश्व के लिये खुले और इसके साथ ही भारत अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार का एक आकर्षक केन्द्र बन गया। यही कारण है कि भारत आज विश्व की प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं में गिना जाता है।

4. भारत के विदेशी सम्बन्धों पर वैश्वीकरण का प्रभाव:—

- **आर्थिक सम्बन्ध**— वैश्वीकरण ने भारत की अर्थव्यवस्था को विश्व की अर्थव्यवस्था से जोड़ दिया है। भारत आज अमेरिका, रूस, जापान, ब्रिटेन और यूरोपीय संघ के देशों के साथ व्यापक व्यापारिक सम्बन्ध रखता है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों ने भारत में निवेश कर औद्योगिक और सेवा क्षेत्र को नई ऊंचाईयों तक पहुंचाया है। 'मेक इन इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी योजनाएं विदेशी निवेशकों को आकर्षित कर रही हैं। सूचना प्रौद्योगिकी और बीपीओ क्षेत्र में तो भारत ने वैश्विक पहचान भी स्थापित कर ली है।
- **वैज्ञानिक और तकनीकी सहयोग**— वैश्वीकरण ने भारत को आधुनिक तकनीक और विज्ञान से जोड़ा है। रूस और अमेरिका के साथ अंतरिक्ष परियोजनाएं, यूरोपीय संघ के देशों के साथ रक्षा अनुसंधान तथा चिकित्सा के रूप में संयुक्त प्रयास इसका उदाहरण है। कोविड -19 महामारी के दौरान भारत द्वारा वैक्सीन निर्माण और 'वैक्सीन मैत्री' योजना ने विश्व में भारत की छवि को और भी सशक्त बनाया।

- **सांस्कृतिक संबंध**— भारत की संस्कृति वैश्वीकरण के माध्यम से विश्वभर में फैल रही है। योग, आयुर्वेद, भारतीय संगीत, नृत्य और बॉलीवुड फिल्मों की लोकप्रियता इसका प्रमाण है। विश्व के अनेक देशों में 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' का आयोजन भारतीय संस्कृति की स्वीकार्यता का परिचायक है। दूसरी ओर पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव भी भारतीय समाज पर पड़ा है— भोजन, पहनावे और जीवनशैली में यह स्पष्ट देखा जा सकता है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान भारत की विविधताओं को दर्शाता है।
- **राजनीतिक और कूटनीतिक संबंध**— भारत ने वैश्वीकरण के दौर में अपने कूटनीतिक संबंधों को भी मजबूत किया है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन, जी-20, ब्रिक्स, सार्क जैसे अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में भारत की सक्रिय भागीदारी से उसका वैश्विक प्रभाव बढ़ा है। आज भारत एक जिम्मेदार राष्ट्र के रूप में शांति स्थापना, पर्यावरण संरक्षण और सतत् विकास के मुद्दों पर भी अग्रणी भूमिका निभा रहा है।

5. वैश्वीकरण से उत्पन्न चुनौतियाँ— हालांकि वैश्वीकरण के अनेक लाभ हैं लेकिन दुष्प्रभाव भी भारत के सामने उपस्थित हुये हैं—

- आर्थिक असमानता:** बड़े उद्योगों को लाभ हुआ किंतु छोटे उद्योग व स्थानीय व्यापार प्रभावित हुये।
- सांस्कृतिक ह्रास:** पाश्चात्य जीवनशैली का अत्यधिक प्रभाव भारतीय परंपराओं को चुनौती देता है।
- विदेशी निर्भरता:** तकनीक और संसाधनों के लिये विदेशी देशों पर अत्यधिक निर्भरता आत्मनिर्भरता की राह में बाधा बन सकती है।
- रोजगार की समस्या:** स्वचालन और विदेशी कंपनियों की प्रतिस्पर्धा से पारंपरिक रोजगार कम हुये।

6. समाधान और भारत की भूमिका— भारत को वैश्वीकरण के अवसरों पर लाभ उठाते हुये अपनी मौलिकता और आत्मनिर्भरता बनाये रखनी होगी। आत्मनिर्भर भारत अभियान इसी दिशा में एक कदम है। सरकार को चाहिये कि वह विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करे लेकिन स्थानीय उद्योगों और 'मेक इन इंडिया' जैसी योजनाओं को भी मजबूत बनाये। इसके साथ ही सांस्कृतिक धरोहरों का संरक्षण करके ही भारत विश्व पटल पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाये रख सकता है।

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण ने भारत के विदेशी सम्बन्धों को मजबूत, व्यापक और बहुआयामी बनाया है। आज भारत केवल एक उपभोक्ता देश नहीं बल्कि विश्व मंच पर अपनी सशक्तिकरण से महत्वपूर्ण उपस्थिति दर्ज करा रही है। यदि भारत आर्थिक विकास, तकनीकी प्रगति और सांस्कृतिक संरक्षण के बीच संतुलन बनाये रखे तो आने वाले वर्षों में यह विश्व का नेतृत्व करने वाला राष्ट्र बन सकता है।



मनोविज्ञान और तकनीक: डिजिटल युग में

साहिल
तकनीशियन 'ए'

प्रस्तावना

21वीं सदी को 'डिजिटल क्रांति' का युग कहा जाता है। आज के डिजिटल युग में, तकनीक हमारे जीवन का एक अविभाज्य अंग बन गई है। सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, हम किसी न किसी रूप में तकनीक से घिरे रहते हैं। लेकिन क्या आपने कभी सोचा है कि यह स्क्रीन, एल्गोरिदम और सोशल मीडिया हमारे सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को कैसे बदल रहे हैं? मनोविज्ञान और तकनीक का यह मिलान आधुनिक युग की सबसे बड़ी चर्चाओं में से एक है। मनोविज्ञान, जो मानवीय व्यवहार का विज्ञान है, आज तकनीक के साथ गहराई से जुड़ चुका है। यह निबंध इस बात पर प्रकाश डालता है कि कैसे डिजिटल युग तकनीक और व्यवहार में बदलाव करता है।

❖ तकनीक का मनोवैज्ञानिक प्रभाव

तकनीक का मनोवैज्ञानिक प्रभाव आज के समय का एक अत्यंत महत्वपूर्ण विषय है। तकनीक ने हमारे मस्तिष्क की कार्यप्रणाली और हमारे व्यवहार को गहराई से बदला है। इसके प्रभावों को हम दो श्रेणियों में बाँट सकते हैं:—

- 1. सकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** यदि सही तरीके से उपयोग किया जाए तो तकनीक मानसिक विकास में सहायक भी है:—
 - **मानसिक व्यायाम:** कई गेम और ऐप्स याददाश्त, तर्कशक्ति और समस्या सुलझाने के कौशल को बढ़ाते हैं।
 - **अभिव्यक्ति का माध्यम:** जो लोग अंतर्मुखी होते हैं उनके लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म अपनी भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने का एक सुरक्षित माध्यम बनते हैं।
 - **सहायक तकनीक:** ऑटिज्म या अन्य मानसिक चुनौतियों से जूझ रहे लोगों के लिए विशेष ऐप्स संवाद करने और सीखने में बहुत मदद करते हैं।
 - **तनाव कम करने के उपकरण:** मेडिटेशन ऐप्स और 'व्हाइट नॉइज' मशीनें तनाव कम करने और मानसिक शांति प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुई हैं।
- 2. नकारात्मक मनोवैज्ञानिक प्रभाव:** तकनीक के अत्यधिक और अनियंत्रित उपयोग से कई मानसिक जटिलताएँ पैदा हुई हैं:—

- **संज्ञानात्मक गिरावट:** गूगल और इंटरनेट पर निर्भरता के कारण हमारी याददाश्त कमजोर हो रही है। इसे 'डिजिटल भूलक्कड़पन' कहा जाता है जहाँ हम जानकारी को याद रखने के बजाय यह याद रखते हैं कि उसे कहाँ खोजना है।
 - **एकाग्रता में कमी:** रील्स और शॉर्ट वीडियो के युग में, हमारा मस्तिष्क बहुत जल्दी ऊबने लगा है। अब लंबे लेख पढ़ना या गहरी बातचीत करना कठिन होता जा रहा है।
 - **नींद और अवसाद:** मोबाइल की नीली रोशनी 'मेलाटोनिन' हार्मोन को रोकती है, जिससे अनिद्रा होती है। नींद की कमी सीधे तौर पर चिड़चिड़ापन और डिप्रेशन से जुड़ी है।
 - **सामाजिक अलगाव:** डिजिटल रूप से हजारों लोगों से जुड़े होने के बावजूद, लोग वास्तविक जीवन में अकेलापन महसूस करते हैं। इसे 'लोनलीनेस पैराडॉक्स' कहा जाता है।
 - **डोपामाइन लूप:** सोशल मीडिया नोटिफिकेशन मस्तिष्क में उसी तरह का 'रिवॉर्ड सिस्टम' सक्रिय करते हैं जैसा नशा करता है जिससे इसकी लत लग जाती है।
3. **तकनीक और व्यवहार में बदलाव:** तकनीक ने हमारे व्यवहार के कुछ नए पैटर्न विकसित किए हैं:—
- **व्यवहार मनोवैज्ञानिक स्थिति:** निरंतर स्क्रॉलिंग अनिश्चित पुरस्कार की खोज (जैसे जुआ खेलना)।
 - **ऑनलाइन सत्यापन:** दूसरों की पसंद पर आत्म-सम्मान का निर्भर होना।
 - **मल्टीटास्किंग:** मस्तिष्क का एक साथ कई काम करने से कार्यक्षमता 40% तक कम हो जाती है।
4. **तकनीक का मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव**
- तकनीक का हमारे मस्तिष्क और मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव बहुत गहरा और जटिल है। हमारा मस्तिष्क 'न्यूरोप्लास्टिसिटी' के गुण के कारण पर्यावरण के अनुसार खुद को ढाल लेता है इसलिए तकनीक का निरंतर उपयोग हमारे मस्तिष्क की बनावट और कार्यप्रणाली को बदल रहा है।
- यहाँ तकनीक के मस्तिष्क स्वास्थ्य पर पड़ने वाले मुख्य प्रभावों का विश्लेषण दिया गया है:—
- I. **मस्तिष्क की संरचनात्मक और कार्यात्मक क्षति:** लगातार स्क्रीन का उपयोग मस्तिष्क के कुछ हिस्सों पर सीधा प्रभाव डालता है:
- **ग्रे मैटर में कमी:** शोध बताते हैं कि इंटरनेट और गेमिंग की लत के कारण मस्तिष्क के 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स' में ग्रे मैटर कम हो सकता है। यह हिस्सा निर्णय लेने, योजना बनाने और भावनाओं को नियंत्रित करने के लिए जिम्मेदार होता है।
 - **संज्ञानात्मक अधिभार:** जब हम इंटरनेट पर एक साथ कई टैब खोलते हैं या मल्टीटास्किंग करते हैं तो हमारा मस्तिष्क सूचनाओं के बोझ तले दब जाता है। इससे सोचने की स्पष्टता कम हो जाती है और मानसिक थकान बढ़ती है।
- II. **रासायनिक असंतुलन व लत:** तकनीक का उपयोग मस्तिष्क के 'रिवॉर्ड सिस्टम' को प्रभावित करता है:—

- **डोपामाइन का प्रवाह:** सोशल मीडिया पर हर 'लाइक' या 'नोटिफिकेशन' मस्तिष्क में डोपामाइन रिलीज करता है। यह एक 'लत का चक्र' बना देता है जिससे व्यक्ति बार-बार फोन चेक करने के लिए मजबूर महसूस करता है।

- **कोर्टिसोल और तनाव:** तकनीक के कारण हमेशा 'कनेक्टेड' रहने का दबाव शरीर में तनाव हार्मोन 'कोर्टिसोल' के स्तर को बढ़ा देता है जिससे लंबे समय में घबराहट और चिड़चिड़ापन पैदा होता है।

III. **न्यूरोलॉजिकल व शारीरिक प्रभाव:** मस्तिष्क का स्वास्थ्य हमारे शरीर की जैविक घड़ी से भी जुड़ा है:—

- **नींद का चक्र और मेलाटोनिन:** स्मार्टफोन से निकलने वाली नीली रोशनी 'मेलाटोनिन' हार्मोन के उत्पादन को रोक देती है। मेलाटोनिन की कमी से नींद का चक्र बिगड़ जाता है जो मस्तिष्क की कोशिकाओं की मरम्मत के लिए अनिवार्य है।

- **डिजिटल भूलक्कड़पन:** हम अब जानकारी याद रखने की कोशिश नहीं करते क्योंकि हमें पता है कि वह 'क्लाउड' या 'गूगल' पर उपलब्ध है। इससे हमारी दीर्घकालिक स्मृति कमजोर हो रही है।

IV. **सकारात्मक प्रभाव (सही उपयोग होने पर):** तकनीक हमेशा हानिकारक नहीं होती। यह मस्तिष्क के लिए व्यायाम का काम भी कर सकती है:—

- **न्यूरल पाथवे का निर्माण:** जटिल वीडियो गेम खेलने से स्थानिक जागरूकता और हाथ-आँख के समन्वय में सुधार होता है।

- **मस्तिष्क का लचीलापन:** नई भाषाएँ सीखने वाले ऐप्स या पहेलियाँ सुलझाने वाले प्रोग्राम मस्तिष्क को सक्रिय रखते हैं और बुढ़ापे में 'डिमेंशिया' जैसी बीमारियों के खतरे को कम कर सकते हैं।

❖ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मनोविज्ञान

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मनोविज्ञान का मेल आधुनिक विज्ञान के सबसे रोमांचक क्षेत्रों में से एक है। जहाँ मनोविज्ञान मानव मन को समझने की कोशिश करता है वहीं AI मशीनी बुद्धिमत्ता के माध्यम से उस समझ को अनुकरण और विस्तारित करने का प्रयास करता है।

इन दोनों के बीच के अंतर्संबंध को हम निम्नलिखित बिंदुओं में समझ सकते हैं:—

1. **मानसिक स्वास्थ्य में AI:** AI आज मनोवैज्ञानिकों के लिए एक शक्तिशाली सहायक उपकरण बन गया है:—

- **प्रारंभिक पहचान:** AI एल्गोरिदम सोशल मीडिया पोस्ट, लिखने के तरीके या आवाज के लहजे का विश्लेषण करके अवसाद या आत्मघाती विचारों के शुरुआती संकेतों को पहचान सकते हैं।

- **AI थेरेपी चैटबॉट्स:** 'Woebot' और 'Wysa' जैसे चैटबॉट्स संज्ञानात्मक व्यवहार थेरेपी (CBT) का उपयोग करते हैं। ये उन लोगों के लिए बहुत मददगार हैं जो किसी इंसान से बात करने में झिझकते हैं या जिन्हें आधी रात को सहायता की आवश्यकता होती है।

- **व्यक्तिगत उपचार:** AI डेटा का विश्लेषण करके यह बता सकता है कि किसी विशेष रोगी पर कौन सी थेरेपी या दवा सबसे प्रभावी होगी।

2. **भावनात्मक AI:** इसे 'इमोशनल AI' भी कहा जाता है। यह मशीनों को मानवीय भावनाओं को पहचानने, समझने और उन पर प्रतिक्रिया देने की क्षमता देता है:—
 - **चेहरे के भावों का विश्लेषण:** कंप्यूटर विज्ञान के जरिए मशीनें यह जान सकती हैं कि आप खुश हैं, दुखी हैं या तनाव में हैं।
 - **सहानुभूतिपूर्ण मशीनें:** शोधकर्ता ऐसी AI प्रणाली विकसित कर रहे हैं जो न केवल उत्तर दे बल्कि उपयोगकर्ता की भावनात्मक स्थिति के अनुसार अपनी भाषा और टोन को भी बदले।
3. **मनोविज्ञान का AI पर प्रभाव:** AI का निर्माण काफी हद तक मानव मनोविज्ञान और मस्तिष्क की कार्यप्रणाली पर आधारित है:—
 - **न्यूरल नेटवर्क:** AI की सबसे प्रमुख तकनीक 'आर्टिफिशियल न्यूरल नेटवर्क' मानव मस्तिष्क के न्यूरॉन्स की संरचना से प्रेरित है।
 - **सीखने की प्रक्रिया:** मशीन लर्निंग के मॉडल वैसे ही तैयार किए जाते हैं जैसे बच्चे दुनिया को देखकर और अनुभव से सीखते हैं।
4. **मनोवैज्ञानिक चुनौतियाँ और नैतिक चिंताएँ:** AI और मनोविज्ञान के मिलन से कुछ गंभीर सवाल भी खड़े होते हैं:—
 - **सहानुभूति का अभाव:** एक मशीन एल्गोरिदम पर चलती है। क्या वह कभी उस वास्तविक मानवीय संवेदना की जगह ले सकती है जो एक मानव थेरेपिस्ट महसूस करता है?
 - **एल्गोरिदम का पूर्वाग्रह:** यदि AI को सिखाने वाले डेटा में पक्षपात है तो वह मनोवैज्ञानिक मूल्यांकन में गलत परिणाम दे सकता है।
 - **गोपनीयता:** जब हम अपनी सबसे निजी भावनाएं AI के साथ साझा करते हैं तो उस डेटा की सुरक्षा एक बड़ी चिंता बन जाती है।

❖ डिजिटल युग की नई मनोवैज्ञानिक बीमारियाँ

डिजिटल युग ने हमें सुविधाओं का उपहार तो दिया है लेकिन इसके साथ ही कुछ ऐसी मानसिक और व्यवहारिक समस्याएं भी पैदा की हैं जिन्हें 'डिजिटल युग की बीमारियाँ' कहा जाता है। ये बीमारियाँ शारीरिक कम और मनोवैज्ञानिक अधिक हैं।

यहाँ प्रमुख डिजिटल मनोवैज्ञानिक बीमारियों का विवरण दिया गया है:—

1. **फोमो (FOMO & Fear Of Missing Out):** यह डिजिटल युग की सबसे आम समस्या है। व्यक्ति को हर समय यह डर सताता रहता है कि दूसरे लोग उससे बेहतर समय बिता रहे हैं या उसे किसी महत्वपूर्ण जानकारी या ईवेंट का पता नहीं है।

प्रभाव: सोशल मीडिया को बार-बार चेक करना, ईर्ष्या महसूस करना और अपने जीवन से असंतुष्ट रहना।

2. **नोमोफोबिया:** इसका पूरा नाम 'No Mobile Phone Phobia' है। यह वह घबराहट या डर है जो मोबाइल फोन के पास न होने, बैटरी खत्म होने या नेटवर्क न होने पर महसूस होता है।

प्रभाव: पसीने आना, घबराहट होना और मोबाइल के बिना खुद को असुरक्षित महसूस करना।

3. **फैंटम वाइब्रेशन सिंड्रोम:** क्या आपको कभी ऐसा महसूस हुआ है कि आपकी जेब में फोन वाइब्रेट हुआ है लेकिन चेक करने पर पता चला कि कोई कॉल या मैसेज नहीं था? इसे ही 'फैंटम वाइब्रेशन' कहते हैं।

प्रभाव: मस्तिष्क का वह हिस्सा जो शारीरिक संवेदनाओं को समझता है वह इतना संवेदनशील हो जाता है कि कपड़ों की रगड़ को भी फोन की वाइब्रेशन समझ लेता है।

4. **डिजिटल एम्नीशिया:** इसे 'गूगल इफेक्ट' भी कहते हैं। जब हम इस भरोसे जानकारी को भूल जाते हैं कि वह इंटरनेट पर आसानी से मिल जाएगी तो उसे डिजिटल एम्नीशिया कहते हैं।

प्रभाव: याददाश्त का कमजोर होना और छोटी-छोटी बातों (जैसे फोन नंबर या रास्ते) के लिए भी तकनीक पर निर्भर रहना।

5. **इन्फोबेसिटी:** इंटरनेट पर सूचनाओं की भरमार है। जब कोई व्यक्ति बहुत अधिक जानकारी का उपभोग करता है तो उसका मस्तिष्क उसे प्रोसेस नहीं कर पाता।

प्रभाव: निर्णय लेने में कठिनाई, मानसिक थकान और काम में ध्यान न लग पाना।

6. **सेल्फीडाइटिस:** यह एक ऐसी स्थिति है जिसमें व्यक्ति लगातार सेल्फी लेने और उन्हें सोशल मीडिया पर पोस्ट करने की इच्छा महसूस करता है ताकि उसे दूसरों से प्रशंसा मिल सके।

प्रभाव: आत्मविश्वास की कमी और अपनी शारीरिक बनावट को लेकर हमेशा चिंतित रहना।

इन बीमारियों के मुख्य लक्षण:—

- चिड़चिड़ापन और नींद की कमी।
- वास्तविक सामाजिक मेलजोल से कतराना।
- गर्दन में दर्द और आँखों में तनाव।
- फोन का उपयोग न कर पाने पर बेचैनी महसूस करना।

❖ समाधान और संतुलन (डिजिटल वेलबीइंग)

मनोविज्ञान और तकनीक के बीच संतुलन बनाना आज के समय की सबसे बड़ी चुनौती है। जिस तरह हम शरीर को स्वस्थ रखने के लिए 'संतुलित आहार' लेते हैं, उसी तरह मन को स्वस्थ रखने के लिए 'डिजिटल संतुलन' अनिवार्य है।

यहाँ मनोविज्ञान और तकनीक के स्वस्थ तालमेल के लिए प्रभावी समाधान और उपाय दिए गए हैं:—

1. **डिजिटल डिटॉक्स:** यह तकनीक से दूरी बनाने की एक प्रक्रिया है ताकि मस्तिष्क को आराम मिल सके।

नियम: सप्ताह में कम से कम एक दिन (जैसे रविवार) 'नो-गैजेट डे' घोषित करें।

प्रभाव: इससे मस्तिष्क का कोर्टिसोल स्तर कम होता है और वास्तविक दुनिया के प्रति जागरूकता बढ़ती है।

2. **20-20-20 का नियम (शारीरिक और मानसिक राहत):** लगातार स्क्रीन देखने से मस्तिष्क और आँखों पर भारी दबाव पड़ता है।

उपाय: हर 20 मिनट के बाद, 20 फीट दूर किसी वस्तु को 20 सेकंड तक देखें।

लाभ: यह 'कॉग्निटिव लोड' को कम करता है और एकाग्रता बनाए रखने में मदद करता है।

3. **सचेत उपयोग:** अक्सर हम बिना किसी कारण के फोन उठा लेते हैं। इसे रोकने के लिए 'RAIN' तकनीक का उपयोग करें:

• **Recognize (पहचानें):** क्या आप बोरियत की वजह से फोन उठा रहे हैं?

• **Accept (स्वीकारें):** उस भावना को स्वीकार करें।

• **Investigate (जांचें):** क्या सोशल मीडिया चेक करने से आपकी समस्या हल होगी?

• **Non-identification (दूरी बनाएं):** खुद को उस लत से अलग समझें।

4. **तकनीकी समाधान:** तकनीक ही तकनीक की समस्या का समाधान भी बन सकती है:—

• **ऐप टाइमर:** अपने फोन में इंस्टाग्राम, फेसबुक या गेम के लिए समय-सीमा निर्धारित करें।

• **ग्रेस्केल मोड:** फोन की स्क्रीन को ब्लैक एंड व्हाइट कर दें। रंगीन ऐप्स दिमाग को अधिक आकर्षित करते हैं जबकि ग्रे स्क्रीन दिमाग के लिए कम उत्तेजक होती है।

• **डू नॉट डिस्टर्ब:** काम के दौरान या सोते समय केवल जरूरी कॉल्स को ही अनुमति दें।

5. **बेडरूम को 'गैजेट फ्री' बनाना:** नींद और मानसिक स्वास्थ्य का सीधा संबंध है।

• **नियम:** बिस्तर पर जाने से कम से कम 1 घंटा पहले स्क्रीन बंद कर दें।

• **विकल्प:** फोन की जगह फिजिकल अलार्म क्लॉक का इस्तेमाल करें ताकि सुबह उठते ही सबसे पहले फोन चेक करने की आदत न पड़े।

निष्कर्ष: तकनीक मानव विकास के लिए एक वरदान है, बशर्ते हम इसके स्वामी बने रहें, सेवक नहीं। मनोविज्ञान हमें यह सिखाता है कि मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन ही सुखी जीवन का आधार है। यदि हम तकनीक का उपयोग विवेकपूर्ण तरीके से करेंगे तो यह हमारे ज्ञान और मानसिक क्षमताओं को बढ़ाने का सबसे सशक्त माध्यम सिद्ध होगी। हमें याद रखना चाहिए कि "वाई-फाई से ज्यादा, खुद के मन से कनेक्शन बढ़ाना जरूरी है।"



किपलिंग ट्रेल: मसूरी की ओर पदयात्रा

अमित धवन
वैज्ञानिक 'जी'

देहरादून की ताजी सुबह की हवा में भीगी हुई मिट्टी की खुशबू घुली हुई थी जब मैं राजपुर रोड स्थित अपने होटल से बाहर निकला। शहर धीरे-धीरे जाग रहा था, कहीं-कहीं स्कूटर का हॉर्न उस शांति को तोड़ रहा था। मैंने अपना बैकपैक उठाया और शाहंशाही आश्रम जाने के लिए एक ऑटो रिक्शा बुलाया—यह वही जगह थी जहाँ से मैं किपलिंग ट्रेल की अपनी एकल यात्रा शुरू करने वाला था। यह ट्रेक मैंने अपने सहकर्मियों के साथ प्लान किया था, लेकिन मैं देर से पहुंचा।

ऑटो जैसे ही घुमावदार रास्तों से गुजरने लगा, मैंने देखा कि दुकानदार अपनी दुकानें खोल रहे थे, चाय वाले अपने स्टॉल सजा रहे थे और कुछ लोग मॉर्निंग वॉक के लिए निकल चुके थे। कुछ ही मिनटों में मैं शाहंशाही आश्रम पहुँच गया—यह एक शांत जगह है जो पहाड़ियों की तलहटी में बसी है।

ट्रेक शुरू करने से पहले एक बूढ़े व्यक्ति ने, जो एक छोटे से पत्थर पर बैठा था, मेरी ओर देखा और मुस्कुरा कर पूछा, “बेटा, अकेले जा रहे हो?”

मैंने सिर हिलाया, “हाँ, मसूरी की ओर जा रहा हूँ।”

उसकी मुस्कान हल्की फीकी पड़ गई। “सावधान रहना। रास्ता बहुत सुंदर है, लेकिन कभी-कभी तेंदुए भी घूमते हैं।”

मेरे गले में कुछ अटका—“तेंदुए?”

उसने बस सिर हिलाया और फिर अपनी बीड़ी सुलगाने में लग गया। मैंने हल्की सी हँसी के साथ डर को किनारे किया। एक गहरी साँस लेकर, बैकपैक ठीक किया, जूते कसकर बाँधे और ट्रेल पर पहला कदम रखा।

किपलिंग ट्रेल का पहला हिस्सा मंत्रमुग्ध कर देने वाला था। पुरानी पत्थरों से बनी पगडंडी घने साल और ओक के पेड़ों के बीच से गुजर रही थी, और सोने जैसी धूप पेड़ों की शाखाओं से छनकर नीचे आ रही थी। सिर्फ मेरे जूतों की आवाज और कभी-कभी पहाड़ी मैना की चहचहाहट ही सुनाई दे रही थी।

थोड़ा आगे जाकर मैं कप्पू व्यूपॉइंट पहुँचा—एक खुली जगह जहाँ से देहरादून का नजारा दिखता है। आसमान एकदम साफ था और शहर नीचे एक छोटे से मॉडल जैसा लग रहा था, जिसमें इमारतें और सड़कें छोटी-छोटी रेखाओं की तरह दिख रही थीं। सूरज अब ऊँचाई पर था और पहाड़ों को सोने और पन्ना जैसे रंगों में नहला रहा था। मैंने फोन निकाला और कुछ तस्वीरें लीं।

मैं सोचने लगा, “ब्रिटिश अफसर जब इसी रास्ते से गुजरते होंगे तो कैसा महसूस करते होंगे?”

कुछ मिनट वहीं बैठकर मैंने नजारे का आनंद लिया और फिर चढ़ाई जारी रखी। मैंने अपनी गति बढ़ा दी, खुद को चुनौती देने के लिए। यात्रा में अकेलापन था, लेकिन वह सुकून भरा था। मुझे बुजुर्ग की बात बार-बार याद आ रही थी—क्या सच में तेंदुआ दिख सकता है? दिल की धड़कन तेज हो गई थी।

अचानक, बाईं तरफ झाड़ियों में सरसराहट हुई और मैं वहीं जम गया। साँस रुकी, लेकिन फिर देखा कि हवा में

तिब्बती प्रार्थना झंडियाँ लहरा रही हैं।

मैंने चैन की सांस ली और खुद पर हँस पड़ा—“लो, तेंदुए से डर भी गया।”

अब मेरे भीतर एड्रेनालिन दौड़ने लगा था और मैं तेजी से चलने लगा। ठंडी पहाड़ी हवा और घाटियों की झलकें मेरी थकान को कम कर रही थीं।

जैसे ही मैं झाड़ीपानी पहुँचा, मुझे आगे चार जानी-पहचानी आकृतियाँ दिखीं—मेरे सहकर्मी डॉ. श्रीवास्तव, डॉ. नंदा, बल सिंह और डॉ. पवन। वे मुझसे एक घंटे पहले चले थे, पर अब मेरी पहुँच में थे।

मैं चिल्लाया, “अरे रुको यारो!”

वो सब मुड़े और चौंक कर बोले, “तू तो लेट चला था! इतनी जल्दी कैसे पहुँच गया?”

मैं मुस्कराया और मन ही मन बोला, “मोटिवेशन और तेंदुए का डर।”

सब हँस पड़े और मुझे अपने समूह में शामिल कर लिया। लंबे समय तक अकेले चलने के बाद साथ मिलना बहुत अच्छा लगा। हमने बाल्लोगंज में एक छोटी चाय की दुकान पर चाय पी। चायवाले ने बताया कि अब इस रास्ते से कम ही लोग आते हैं, सभी लोग आसान मोटर रोड से जाते हैं। मैंने सोचा, “लोग नहीं जानते कि क्या-क्या मिस कर रहे हैं।”

अब यात्रा का सबसे कठिन हिस्सा शुरू हुआ। बाल्लोगंज की चढ़ाई सबसे खड़ी थी और हर कदम एक पत्थर उठाने जैसा लग रहा था। पसीना माथे से बह रहा था और मांसपेशियाँ दर्द करने लगी थीं। कुछ छोटे-छोटे ब्रेक लेकर मैंने फिर चढ़ाई शुरू की। अब शरीर थोड़ा सहज हो चुका था और मन उत्साहित।

अंतिम हिस्सा थका देने वाला था लेकिन रोमांच से भरा हुआ। मेरे पैर अब रुकना चाहते थे, लेकिन ‘पिक्चर पैलेस, मसूरी’ के विचार ने मुझे चलते रहने की ताकत दी।

घंटों की पदयात्रा के बाद आखिरकार ट्रेल मुख्य मसूरी सड़क से मिल गई और दूर से मुझे पिक्चर पैलेस टैक्सी स्टैंड दिख गया।

“मैंने कर दिखाया!” मैं खुशी से चिल्लाया।

एक गहरी संतोष की लहर मेरे भीतर उमड़ पड़ी। मैंने किपलिंग ट्रेल को पार कर लिया था—एक ऐतिहासिक रास्ता, केवल अपने हौसले और हिम्मत के बल पर।

थोड़ा आराम करने के बाद हम माल रोड की ओर निकल पड़े। हमने दुकानों में घूमना शुरू किया और एक प्रसिद्ध कैफे में गरमागरम पराठों का स्वाद लिया।

लाइब्रेरी चौक पर हम एक बेंच पर बैठ गए, लोग तस्वीरें खींच रहे थे, और दूर पहाड़ियों का दृश्य सामने था। थकान अब संतोष में बदल गई थी।

शाम को हमने देहरादून के लिए बस पकड़ी। नीचे की ओर सफर आरामदायक था लेकिन जैसे किसी सपने से कम नहीं लग रहा था। खिड़की से बाहर देखते हुए, हम वही घुमावदार रास्ता देख रहे थे जिसे हमने पार किया था।

जो यात्रा अकेले शुरू हुई थी, वह सहकर्मियों के साथ एक अविस्मरणीय रोमांच बन गई थी। किपलिंग ट्रेल ने मेरी सहनशक्ति की परीक्षा ली, लेकिन बदले में बेमिसाल दृश्य, रोमांचक अनुभव और एक ऐसी उपलब्धि दी जो हमेशा याद रहेगी।

होटल लौटते हुए मैंने अपने धूल से सने जूतों को देखा और मुस्कुरा दिया।

आज मेरी मांसपेशियाँ जरूर दुखेंगी, लेकिन आज मैं खुद को दुनिया की सबसे ऊँची चोटी पर महसूस कर रहा था।



स्त्री- चेहरा एक, रूप अनेक

नेहा अग्रवाल
वैज्ञानिक 'ई'

एक छोटे से गाँव में अनु नाम की लड़की थी। वह हर रोज सुबह-सवेरे अपनी माँ को हजारों काम करते देखती और हैरान हो जाती।

सूरज निकलते ही माँ अनु को स्कूल के लिए तैयार करती। उसके लिए नाश्ता बनाती, फिर नाश्ता कराकर स्कूल छोड़कर आती। फिर विद्यालय से लौटकर घर के काम निपटाने में लग जाती। रसोई घर में जाकर पूरे परिवार के लिए प्यार से खाना पकाती। अनु के दादा-दादी को नाश्ता परोसती, उसके पिता का लंच बाँधती। फिर स्वयं नाश्ता करती। यह सब देखकर बार-बार अनु के मन में ख्याल आता- “अरे! माँ तो कितना स्वादिष्ट भोजन पकाती है। क्या, माँ एक रसोइयाँ है।”

सबके काम पर जाने के बाद माँ लेपटॉप निकाल, अपने काम पर लग जाती। खूब मन लगाकर मेहनत कर ऑफिस का काम करती। अनु जब भी अपनी माँ को लेपटॉप पर देखती तो उसके मन में यही ख्याल आता- “मेरी माँ कितनी मेहनत करती है। वह घर के साथ-साथ ऑफिस का काम भी कितने अच्छे से करती है।”

दोपहर को जब अनु विद्यालय से लौटकर आती, तो गृहकार्य कराती। उसके सारे प्रश्नों का उत्तर देती। उसे सारी चीजे बड़ी सरलता से समझाती। ऐसे में अनु के मन में विचार आता- “मेरी माँ कितनी अच्छे से मुझे पढ़ाती है। मेरी माँ तो एक शिक्षिका भी है।” जब सूरज ढलता तो माँ बगीचे में जाती और सारे पेड़-पौधों को पानी डालती। पक्षियों के बरतन में उनके लिए अनाज डालती। तब भी अनु यही सोचती- “माँ तो सब पेड़-पौधों का ध्यान भी बिलकुल ऐसे रखती है जैसेकि वह हमारे परिवार का हिस्सा हों।”

शाम को अनु को खेलते-खेलते चोट लग जाती है। वह रोते हुए अपनी माँ के पास जाती है। उसकी माँ उसे दवा लगाती है और एक चुटकुला सुना उसका ध्यान भटका, चेहरे पर फिर से मुस्कुराहट ले आती है। तो अनु के मन में फिर से विचार आता है कि “मेरी माँ तो पूरे परिवार की चिकित्सक भी है। जब भी कोई बीमार पड़ता है। माँ उसका कितने अच्छे से ख्याल रखती है।”

रात को जब अनु सोने के लिए जाती है तो उसकी माँ उसे देश प्रेम से भरी वीरगाथाएँ सुनाती है और अनु मीठ-मीठे सपनों में खो जाती है। वह अपने स्वप्न में भी अपनी माँ को पाती है - “कि मेरी माँ सिर्फ पूरे परिवार से नहीं, अपने देश से भी कितना लगाव रखती है। मेरी माँ देश की सच्ची नागरिक भी है।” उसे अपने स्वप्न में अपनी माँ के हर रूप नजर आते हैं- अब उसे प्यार करने वाली माँ, उसके घर का ध्यान रखने वाली - घरेलू स्त्री, अपने ऑफिस का काम करने वाली कामकाजी महिला, बीमारी में ध्यान रखने वाली चिकित्सक, उसकी शिक्षिका। वह अपनी माँ को इस रूप में देखकर उनका आभार प्रकट करती है और अपने मन में प्रण लेती है कि वह भी अपनी माँ की तरह खूब मेहनत करेगी और एक अच्छी इंसान बनेगी।

वास्तविक अमीरी

आनंद कुमार सिंह
वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

भारतवर्ष के एक छोटे से गाँव में एक लड़का रहता था। उस लड़के का नाम था मोहन। उसके गाँव में एक नदी बहती थी जिसका नाम था अमृतगंगा। उसका गाँव जंगलो के बीचों-बीच था। इस सबका मतलब ये था कि उसका गाँव किसी स्वर्ग से कम सुंदर ना था। मोहन के पास कुछ सपने थे जोकि उसे बड़े होकर पाने थे। मोहन का एक सपना, बड़ा होकर एक सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने का था। यह सपना उसने अपने एक शहर में रहने वाले दूर के रिश्तेदार की अमीरी को देखकर बनाया था। वैसे तो मोहन गणित और विज्ञान में काफी होशियार था परन्तु सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने का सपना उसने अमीर बनने और शहरों की चकाचौंध को देखकर बनाया था। वह चाहता था कि गाँव के बाग-बगीचों को छोड़कर जल्द से जल्द नोएडा, गुरुग्राम या बेंगलोर जैसे शहरों में जाकर अमीरी से रहे। उसके अपने गाँव के बाग-बगीचों से, खेतों और खलिहानों से, गाय-बकरी तथा अन्य पशुओं को खाना-खिलाने आदि से मन भर गया था। वह चाहता था कि जल्द से जल्द इस नीरस जिंदगी से मुक्ति मिले। मोहन के माँ-बाप ने उसकी पढ़ाई पर बहुत ध्यान दिया तथा वह खुद के काबिलियत को भी अच्छे से पहचानते थे। इस कारण उसका बारहवीं के बाद आईआईटी बाँबे में कम्प्यूटर साइंस इंजीनियरिंग में भी दाखिला हो गया। उसने कॉलेज में भी अच्छी तरह पढ़ाई की। परिणामस्वरूप उसका प्लेसमेंट भारत की एक बहुत अच्छी कंपनी में सॉफ्टवेयर इंजीनियर के पद पर हो गया। उसकी सालाना आय 5 करोड़ रूपए थी। अब उसका नोएडा में एक बहुत अच्छा मकान था, महंगी कार थी, बहुत से पैसे थे। मोहन इन सबको पाकर खुशी से फूला नहीं समा रहा था। वो खुद को बहुत सफल समझने लगा था। अपनी गाँव की जिंदगी को धीरे-धीरे भूलने लग गया था।

इस प्रकार 20 वर्ष तक वह इसी जिंदगी में व्यस्त रहा। अत्यधिक पैसों की वजह से वह शराब पीने लगा। दिन भर मोबाईल और लैपटॉप के आगे बैठकर काम करने से उसकी आँखें खराब हो गईं। वह अपने पैसों को दुगुना-तिगुना करने के लिए दिन भर ट्रेडिंग करने और बड़ी कंपनियों के शेयर खरीदता-बेचता रहा। खुद को खुश करने के लिए वो और शराब पीता तथा फिलपकार्ट और अमेजन से खूब शॉपिंग करता। लेकिन फिर भी उसको खुशी नसीब नहीं हो रही थी। दिन-प्रतिदिन वो अन्दर से खोखला होता जा रहा था। ऊपर से दिल्ली नोएडा के प्रदुषण ने उसकी जिंदगी ज्यादा खराब कर दी थी। अचानक एक दिन उसके घर से एक बुरी खबर आई। दरअसल घर में किसी का देहांत हो चुका था। किन्तु वो उस दिन घर नहीं गया क्योंकि उसी दिन उसकी एक जरूरी व्यावसायिक बैठक थी। अब वह उस कंपनी का CEO बन चुका था इसीलिए अगर वह उस बैठक में शिरकत नहीं करता तो उसको पैसों का बड़ा नुकसान हो जाता। इसीलिए उसने गाँव जाने की बजाए पैसे कमाने को तरजीह दी।

अगले दिन उसके घर से किसी परिजन का फोन आया। उनका कहना था कि, "मोहन बेटा तुम पैसों के चक्कर में अपने परिवार को भूल गए। दरअसल उसकी माँ बहुत दिनों से बीमार थीं। उसकी अंतिम इच्छा थी कि वो अपने बेटे से एक बार मिलकर गले लगा लें।" लेकिन मोहन एक बार भी अपनी बीमार माँ से मिलने नहीं गया।

मोहन अपनी माँ की अंतिम यात्रा में भी पैसों के लालच में नहीं गया। उस दिन मोहन कार्यालय से घर ना आकर एक पार्क में कुछ समय बिताने के लिए गया। साथ में कुछ शराबी मित्र भी थे। उस दिन मोहन पैसे खर्च नहीं कर रहा था। अब मोहन उस पार्क की एक बेंच पर अकेला बैठा था। पूरे भीड़-भाड़ वाले शहर में वो खुद को अकेला महसूस का रहा था। अब उसे समझ आ गया था कि गाँव में वो वास्तविकता में कितना ज्यादा अमीर था परन्तु शहर की तिलस्मी अमीरी और चकाचौंध ने उसको कितना गरीब और निर्दयी बना दिया है।

मेले में अकेला

नितिन कुमार
तकनीकी अधिकारी 'बी'

राजू रोजाना स्कूल में पढ़ाने जाते थे तो उन्हें एक बार लड़का रोजाना बड़े गोर से देखता था। आस-पास कुछ बच्चे खेल रहे थे लेकिन वह लड़का उनके साथ नहीं खेलता। केवल अकेला बैठा हुआ सोचता रहता था। एक दिन राजू ने उससे पूछा कि "तुम यहाँ क्या करते हो? और आने-जाने वाले व्यक्तियों को देखते रहते हो। तुम क्यों नहीं खेलते हो?" लड़का यह सुनकर बिना बोले वापस वहाँ से चला गया। तभी उसने पास चल रहे बच्चे से पूछा कि "ये लड़का कौन है? वह क्या देखता है? तुम इसे क्यों नहीं खिलाते हो?"

उस लड़के ने बताया कि "यह श्याम है पिछले वर्ष यह दसवीं में फेल हो गया था तो इसके पापा ने इसे पीटा और सभी लड़के इसका मजाक उड़ाने लग गए। जिसकी वजह से यह गुमसुम रहने लगा व अब इसके पापा भी इससे ठीक से बात नहीं करते हैं। यह घर केवल खाना-खाने व सोने के लिए ही जाता है तथा पढ़ाई छोड़ चुका है।" यह बात सुनकर राजू को बड़ा ही दुःख हुआ।

यहाँ इतने बच्चे हैं लेकिन यह अकेला रहता है। राजू समझ चुका था कि यह अवसाद में पहुँच चुका है। क्योंकि यही समस्या उसकी बेटी के साथ भी हुई थी तो उसने डॉक्टर से मिलकर उस समस्या से उसको छुटकारा दिलावाया था। अब उसकी बेटी से सभी के साथ खेलती है और पढ़ती भी है। उसने अब श्याम के पिता जी से मिलने की सोची। एक दिन राजू, श्याम के घर उसके पिता जी से मिलने पहुँच गए और पिताजी को सारी बात बताते हुए समझाया कि "यह श्याम अवसाद से गुजर रहा है जोकि एक गंभीर बीमारी है ना कि कोई व्यक्ति का स्वभाव।" अतः इसे थोड़ा गंभीर तरह से ले वरना यह लगातार बढ़ता ही जाता है। राजू ने फिर अपनी बेटी के बारे में भी बताया कि वह भी इसी तरह मेले में अकेला महसूस करती थी। अतः इसे डॉक्टर से मिलकर उपचार कराओ। सही उपचार से श्याम बिलकुल ठीक हो जायेगा।

कुछ दिन बाद राजू ने देखा कि श्याम दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था अतः अब वह मेले में अकेला नहीं था।



सफलता की मुस्कान

विक्रम दत्त
वाहन चालक 'बी'

अनुराधा, जी हाँ! यही नाम था उस कर्मठ महिला का नाम जो एक साधारण से मध्यम वर्गीय परिवार में पली-बढ़ी थी। उनके पिता एक सरकारी कार्यालय में कार्यरत थे, जिस वजह से उन्हें गाँव छोड़कर शहर में शिफ्ट होना पड़ा। यही अवसर था अनुराधा को अपनी आकांक्षाओं को पूरा करने का। इस समय वह दसवीं पास कर चुकी थी, उसके माता-पिता चाहते थे कि उसके हाथ पीले कर दें लेकिन अनुराधा आगे पढ़ना चाहती थी।

एक दिन कुछ ऐसा प्रतीत हुआ कि उनके रिश्ते के बारे में अनुराधा के माता-पिता आपस में बात कर रहे हैं। अनुराधा ने बीच में ही बात काटकर बड़े ही भोलेपन में कहा, "पापा मैं पढ़ाई करना चाहती हूँ" बस इतना ही कहा था फिर पापा अपनी बात कहना शुरू ही किये थे कि "पर बेटा" उतने में ही अनुराधा ने बीच में बात काटकर कहा कि "नहीं पापा मुझे अभी शादी नहीं करनी है" इस जोर देकर कही बात सुनकर मम्मी और पापा एक-दूसरे का मुहं ताक रहे थे।

फिर अनुराधा के पिता ने अचानक कुछ क्षण रुककर कहा "ठीक है। मेरा बेटा अभी पढ़ाई करेगा।" अनुराधा के दसवीं में अच्छे अंक थे इसीलिए उसे विज्ञान में दाखिला आसानी से मिल गया। अनुराधा ने बहुत मेहनत की। स्कूल से आने के बाद वह पढ़ाई के अलावा अपनी मां का भी घर के काम-काज में हाथ बटाती थी। अब 12वीं कक्षा का परिणाम आ चुका था और उसने पूरे स्कूल में टॉप किया था।

उसकी पढ़ाई में लगन को देखते हुए अनुराधा के माता-पिता ने उसकी शादी की बातचीत बंद कर दी, साथ ही उसे यूनिवर्सिटी में दाखिला मिल गया था जहां उसने खूब मन लगाकर पढ़ाई की। पढ़ाई के साथ-साथ उसने कॉलेज में होने वाले कई प्रकार के कार्यक्रमों में भागीदारी की, वहां भी उसे भरपूर सराहना मिली। आखिर वह दिन भी आ गया जब उसे गणित में गोल्ड मेडल मिला और उसने गणित में पी.एचडी करने की ठान ली।

अनुराधा ने समयानुसार अपनी पी.एचडी पूरी की। उसके पश्चात् देशभर में उसके द्वारा किए गए शोध को संज्ञान लेते हुए चर्चाएं होने लगी साथ ही उसके शोध-ग्रंथ तथा गणितीय स्थापनाओं को देशभर के स्कूल-कालेजों में पढ़ाया जाने लगा।

अनुराधा आज किसी भी परिचय की मोहताज नहीं रही। वह आगे चलकर एक सफल गणितज्ञ बनी। अब बड़े-बड़े संस्थानों में उसे मुख्य अतिथि रूप के बुलाया जाता है। आज उसकी चर्चा हर जगह होती है और उसके चेहरे पर सफलता की मुस्कान है।



विकास की दौड़

अर्चना चौहान
एमटीएस

किसी शहर में एक परिवार रहता था। जिसमें कुल तीन सदस्य पति, पत्नी और उनकी पुत्री थे। परिवार के आय के साधन अच्छे थे। दोनों पति-पत्नी मल्टीनेशनल कंपनी में नौकरी करते थे। उनके पास पैसों की कोई कमी नहीं थी, सिर्फ एक चीज का अभाव था वह था समय। दोनों पति-पत्नी अपनी पुत्री जिसका नाम ऐनी था, को समय नहीं दे पाते थे। जब कभी ऐनी अपने माता-पिता से साथ खेलने व समय बिताने की जिद करती तो वे उसे 'मोबाइल या लेपटॉप' दे देते थे। जब ऐनी चार-पाँच साल की हो गयी तो वह माता-पिता से बाहर ले जाने की जिद करने लगी परन्तु माता-पिता अपनी पुत्री ऐनी को बाहर घुमाने ले जाने में डरते थे क्योंकि बाहर प्रदूषण और गर्मी अधिक होने कारण ऐनी को फेफड़ों तथा त्वचा से संबंधित रोग न हो जाएं। बाहर का वातावरण अत्यधिक प्रदूषित होने कारण उन लोगों ने घर के अंदर हवा शुद्ध करने वाले यंत्र लगा रखे थे। ऐनी के पिता को इस बात से अत्यधिक दुःख हुआ कि इन सबका कारण हम इंसान ही हैं। यह बात सोचते-सोचते उन्हें नींद आ गई तभी उन्होंने एक सपना देखा कि सारी पृथ्वी पर प्रदूषण इतना बढ़ गया कि सांस भी लेना दूभर हो गया है। जिस कारण यदि घर से बाहर आना-जाना पड़े तो ऑक्सीजन मास्क के बिना जाना संभव नहीं। सपने में जब वह (पिता) मास्क लगाकर बाहर गये तो उन्होंने देखा कि पृथ्वी पर पेड़-पौधे कहीं नजर नहीं आ रहे थे। प्रदूषण की वजह से आसमान काला नजर आ रहा था। उन्हें जब प्यास लगी तो पीने का पानी भी कहीं लुप्त हो गया। सिर्फ काला कीचड़ नजर आ रहा था। जब वह इधर-उधर भटक रहा था तब उसे बहुत घुटन महसूस हो रही थी। जिस कारण उनकी नींद टूट गई। नींद टूटने के बाद जब वह उठे तो उन्होंने ईधर-उधर देखा तो सब सामान्य लग रहा था। तब उन्होंने अपनी पत्नी और पुत्री ऐनी को बुलाया और कहने लगे कि यदि समय रहते हम इंसानों ने अपने स्वार्थ के लिए वनों (पेड़ पौधों) को काटना बंद नहीं किया तो वह दिन दूर नहीं जब हमें आक्सीजन मास्क लगाकर घर से बाहर जाना पड़ेगा। आगे उन्होंने अपनी पत्नी से कहा कि हम विकास की दौड़ में इतने अंधे हो गये हैं कि अपनी आने वाली जिंदगी के विषय में नहीं सोच पा रहे हैं। कहीं ऐसा न हो कि हमारी आने वाली पीढ़ी को हरे-भरे पेड़-पौधे, नीला आकाश, स्वच्छ जल हमें किसी संरक्षित किये गए जार की वस्तुओं के रूप में न दिखाना पड़े। उन्होंने तभी प्रण लिया कि हर महीने एक पौधा अवश्य लगायेंगे तथा अपनी पुत्री को मोबाइल या लेपटॉप देने के बजाय समय निकालकर बाहर घुमाने ले जायेंगे।



बन गए साइंटिस्ट जी

अमित धवन
वैज्ञानिक 'जी'

बन गए वैज्ञानिक जी, सब बोले "वाह जी वाह!"
पर कोड का रिव्यू अब भी खुद करना पड़ता है।

सोचा था अब तो मीटिंग्स में बॉस बन जायेंगे,
पर "एक्शन आइटम" अब भी हम ही उठाएंगे।

सोचा अब तो काम स्मूथ हो जाएगा भाई,
पर बग्स ने बोला, 'सपने देखो ना, हम वापस आये!

टीम में बोला, "मैं अब सीनियर हूँ भाई!"
पर डिप्लॉय के समय पे बोले, "अरे तू ही कर भाई, हम जल्दी आये।"

आईडी कार्ड पर लिखा है साइंटिस्ट जी का नाम,
कोड चले तो भगवान का काम, वरना हमारा ही नाम!

ईमेल की बरसात, और डेडलाइन का तूफान,
आईडीई भी बोला – "कोडिंग को अब तू दे थोड़ा आराम!"

वीकेंड प्लान पहाड़ों के, पर सिस्टम क्रैश हो गया भाई,
पत्नी बोली, "साइंटिस्ट हो या ऑफिस के घर जमाई?"

प्रमोशन का लड्डू, खाया बड़ा स्वाद से,
पर डेडलाइन आई सीधा फॉर्मूला-1 रफ्तार से।

बन गए वैज्ञानिक जी, पर हाल है पुराना,
कोड भी लिखना है, और समझना भी है जमाना।



दृष्टि

अनुराग पाठक वैज्ञानिक 'एफ'

विष में मधु है, मधु में विष है
कुदरत की तासीर यही,
अभिशाप विपुलता देती है
जाने न संचक दीन बड़ा,
रवि की शीतलता, ताप शशि का
कहाँ समझ मे आता है,
दृष्टि सभी के लिए हो सम
सूरज चंदा सिखलाते हैं।
क्रमिक संतुलन की खातिर
लहरें भी हिलोरा खाती हैं,
कर देते स्वयं दान पर्ण को
वृक्ष दिशा दिखलाते हैं।
सीख मंजिले देतीं हैं
राहें तो बस भरमाती हैं,
शूल न चुभते फूलों को
कर्दम (कीचड़) अंबुज (कमल) को खिलाते हैं।
आकर्षण है धर्म धरा का
धुरी एक पर थिरके सब,
विनय यही मेरी बस अंतिम
सृष्टि न अनुचित करती है।
समदर्शी हो देख सभी को
एक-सा ही सब लक्षित हो।



गणित में जीवन या जीवन में गणित

पूजा वैज्ञानिक 'बी'

सवेरे की चाय में अनुपात की बात,
दूध और पानी का सही मिलन है सौगात।
दुकान पे छूट का प्रतिशत समझाना,
है बचत में गणित का जादू दिखाना।

गाड़ी की रफ्तार, दूरी और समय,
गति का सूत्र बनता है हर पल में नियम।
घर की दीवारों में क्षेत्रफल का मोल,
रंग खरीदते वक्त, गणना का रोल।

बच्चों की कतार में क्रमचय का खेल,
कितने तरीके से बाँटे टॉफी, ये है झमेल।
बजट बनाते वक्त जोड़-घटाव की चाल,
हर खर्चे में छुपा होता है गणित का हाल।

घड़ी की सुइयों में कोणों की बात,
तीव्र, समकोण-हर पल की सौगात।
मोबाइल के पासवर्ड में संभाव्यता छुपी,
कौन-सा अंक चुने, किस्मत की जुबानी।

जीवन की धड़कनों में गणित समाया,
गणित के सागर में जीवन छिपाया।
अब खोलेंगे हम वो रहस्य अनजाने,
जहाँ नजर आये बस ज्ञान के पहराने।

हर पल की बूँदें जब जुड़ती हैं साथ,
तो बनता है अनुभवों का समग्र आकार।

जैसे नदी की धार को नापे कोई,
समाकलन (integration) है-क्षणों को जोड़ने की खोई।

एक मूर्ति संगमरमर में गढ़ी,
दूसरी तस्वीर में वही छवि पड़ी।
संरचना बदले, पर अर्थ न जाए,
समरूपता (isomorphism) यही तो दर्शाए।

सेल्फी में मुस्कान वही,
फिल्टर बदले, भाव नहीं।
जैसे संरचना रहे बरकरार, पर रूप ले नए अवतार,
होमोमोर्फिस्म की दुनिया का यही तो है राज।

चावल पकाने की विधियाँ अनेक,
देगची, कुकर या मिट्टी के बर्तन नेक।
पर स्वाद वही, परिणाम समान,
तुल्यता वर्ग का यही है विधान।

हर इंसान की अपनी सीमा, अपनी कसौटी,
जैसे हर कार्य का अपना माप, अपनी सच्चाई।
नॉर्म है वो जो बताता है दूरी,
किसी लक्ष्य से कितने पास या कितने दूर हैं हम अभी।

नृत्य की मंडली, हर कदम में ताल,
हर चाल में छुपा है एक गणितीय हाल।
समूह है वो जो नियमों में बंधा,
पर हर सदस्य फिर भी स्वतंत्र चला।

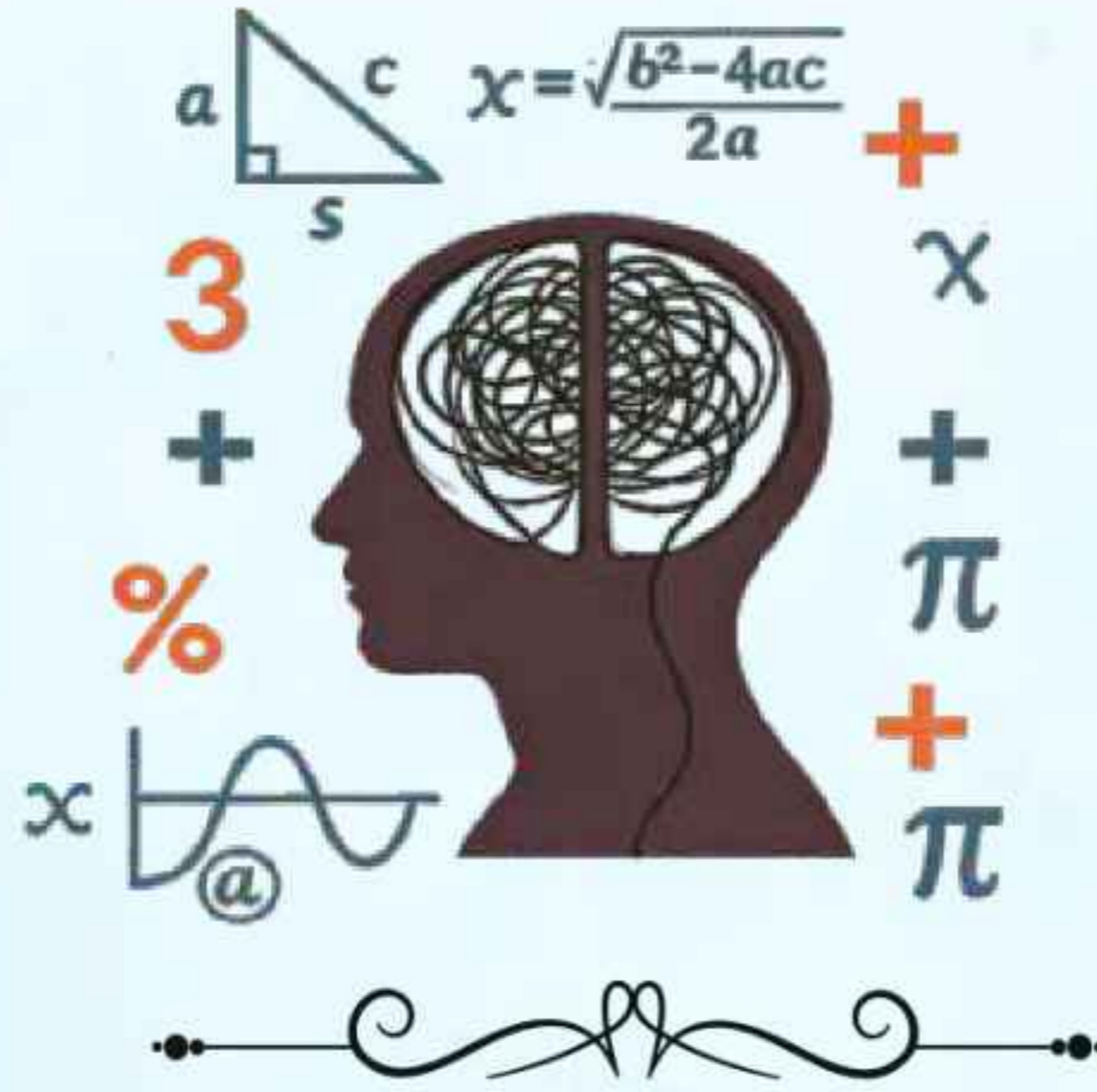
कभी जीवन की राहें होती हैं अनालैटिक,
हर मोड़ पर स्मूथ, हर बिंदु पर स्पेसिफिक
और कभी क्रिटिकल पॉइंट से टकरा जाते हैं हम,
जहाँ सब कुछ अनिश्चित, सब कुछ भ्रम।

कभी कर्वेचर बताता है तनाव,
कभी जिओडेसिक दिखाता है सहज प्रवाह।
जीवन की सतहें भी होती हैं कर्वड,
पर हर कर्व में छुपा होता है अर्थ।

हर संबंध सीधा नहीं होता,
कुछ इक्वेशंस जीवन की उलझी होती हैं।
न कोई लिनेअरिटी, न कोई सिमिट्री,
बस केओस में छुपा एक पैटर्न, एक एनर्जी

फिक्स्ड पॉइंट्स की तलाश में भटकते हैं हम,
कभी मिलते हैं, कभी बायफिर्कट हो जाते हैं गम।
नॉनलिनियर दुनिया में, हल आसान नहीं,
पर हर जटिलता में छुपा होता है संगीत कहीं।

जीवन की जटिलता को सुगमता देता है गणित
हर मोड़ हर आयाम को छूता है गणित।
किसी को अछूता नहीं छोड़ता है गणित
जाने अनजाने सब प्रयोग करते हैं गणित।



प्रकृति बनाम मानवता: भूल से सुधार तक

नेहा अग्रवाल
वैज्ञानिक 'ई'

नदियों में उफान है आया,
प्रकृति ने विकट रूप दिखाया।
बादलों ने भी बिगुल बजाया,
भूस्खलन से पहाड़ों पर मातम है छाया।।

चक्रवात भी दे रहे आघात,
भूकंप भी जता रहें प्रकृति के जज्बात।
जहाँ थे खेत, वहाँ है अब सन्नाटा,
भूखमरी-त्रासदी बनी सबकी विधाता।।

पक्षी भटके, ऋतुओं की चाल बदल गई,
लेकिन मानवता लोभ के कारण सही राह से फिसल गई।
सूरज की लपटें और तेज हुई,
गर्मी से नदियाँ भी रेत हुई।
कभी जहाँ थी कोयल की कूक,
आज वहाँ झुलसाती है धूप।।

वायु में जहर श्वास भी लेना हुआ भारी,
हर कण में धुआं ला रहा अपने साथ अनगिनत बीमारी।।

नदियाँ भी हुईं विषैली, जल-जीवन भी गया है थम,
समुद्र भी चीखकर कहने लगे और साथ न दे पाएंगे हम।

रसायन ने मिट्टी को जहर बना डाला,
बीजों का भविष्य भी सूना कर डाला।
जहाँ उगते थे फूल और अनाज,
वहाँ है फैला प्लास्टिक का राज।।

धरती माँ कराह रही है चुपचाप,
झेल रही मानव लोभ का संताप।

लेकिन मानव जाति अब भी बन रही अंजान,
इन्हें घमंड है "हम ही है सबसे महान।।"

प्रकृति नहीं सह पा रही अब यह द्वेष,
उसने भी बदला अपना भेष।।

वह भी अब मानव से पूछे यह प्रश्न,
"कब तक करते रहोगे मेरा ही पतन।।"

पेड़ काटोगे तो साँस कहां से लाओगे?
दूषित जल से प्यास कैसे भुझाओगे?

प्रकृति कह रही है:-

मानव अब भी वक्त है तेरे पास संभल जा,
छोड़ ये लोभ मेरा बंधु बन जा।

चल लगा पेड़ों की कतार,
कर दे फिर से हरा भरा मेरा संसार।

हवा में गूंजेगा फिर संगीत हर ओर
जल-जीवन भी झूम उठेगा, पंछी भी करेंगे शोर
सुनहरी धूप लाएगी फिर हर आंगन में मुस्कान
चल अब जल्दी से कर दे तू पूरे मेरे अरमान

(अब मानव को अपनी भूल का एहसास होते हुए)

मानव:—

हे प्रकृति माँ, हुई है बहुत बड़ी भूल,
स्वार्थी होकर मैंने गलत राह ली थी चुन
तेरे हर हिस्से को तबाह किया,
क्योंकि मैं था अपनी अलग ही धुन,
तूने दी है अब मेरी आँखे खोल,
हो गया है ज्ञान मुझे कि तू है कितनी अनमोल
अब मेरे हृदय में पश्चाताप है गहरा,
लेता हूँ प्रण होगा सब कुछ फिर से सुनहरा
न कटेंगे पेड़, न नदियों में विष बहेगा ।
अब मैं कदम मिलाऊंगा तेरे साथ, फिर संतुलन का दीप जलेगा ।।



जनरल डिब्बा: चलती साँसों का ठिकाना

राजकुमार
वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

सुबह की पहली किरण के साथ लग जाती है लाइन,
टिकट मिले या न मिले, चढ़ना है— यही है साइन!

धक्का—मुक्की, भीड़ भरी, फिर भी सबसे न्यारा है,
जनरल डिब्बा भारतीय रेल का सच्चा सितारा है।

ना सीट की गारंटी, ना चैन की नींद,
फिर भी है सबको जाने की जिद,

ना आरक्षण, ना सुविधा का मेला,
फिर भी हर रोज उम्मीदों से सजती है ये बेला।

ये डिब्बा नहीं, कोई कंधा है थका हुआ,
जहाँ हर मुसाफिर है भीतर से बुझा हुआ।

टूटे बैग, घिसे जूते, आँखों में धूल भरी,
उम्मीदें जैसे गाड़ी के नीचे कहीं हो गिरी।

भीड़ से लबालब, फिर भी खाली,
हर चेहरा जैसे कोई कहानी।

दरी बिछी हो या अखबार पुराना,
यहीं हर रोज बनता है ठिकाना।

भीड़ के साथ में टिफिन की महक,
कंधों से कंधे की खामोश बहस।

टूटे बैगों के संग बिखरे अरमान,
फिर भी दिल में जगते उम्मीद के जहान।

कोई बैठा है चुपचाप, कोई गुनगुनाता,
भीड़ में जैसे कोई गीत बन जाता।

छोटी सी जगह में जिंदगी फैलाने की जिद है,
सोने की जगह नहीं, फिर भी पलकों पे नींद है।

किसी के लिए ये है रोज का सफर,
किसी के लिए जैसे जीवन का अवसर।

कोई बैठा है, कोई लटक रहा,
फिर भी हर कोई यहाँ तक रहा।
सामने बैठा मजदूर भाई,
बगल में टीचर, आगे सिपाही।

बैठे—बैठे बनते हैं रिश्ते,
जो फिर कभी नहीं दिखते।

थका हुआ, मगर जिंदा,
संघर्षों में पला, भीड़ में गुम नाम,
पर हर एक का अपना अंजाम।

छोटा सा पंखा, गर्मी का मौसम,
फिर भी बातें चलती हैं जैसे हो कोई सावन का मौसम।

पंखा चला तो हवा नहीं आई,
चलो भैया, यही तो है जनरल डिब्बे की मलाई।

कभी भीड़ कभी खालीपन, यही तो है जीवन का दर्पण,
न कोई अमीर न कोई गरीब, सब चलते हैं इसमें करीब।

रेल की पटरियों पर दौड़ता,
हर स्टेशन पर कुछ छोड़ता,
और नये सपनों का कारवां जोड़ता,
जनरल डिब्बा सबको समानता का सन्देश है देता।



एक शपथ - हर माँ के लिए

चित्रा कुशवाहा
वैज्ञानिक 'बी'

माँ.....

जो नौ महीने एक जान को अपनी कोख में रखती है,
जिसके जन्म के लिए वह असहनीय पीड़ा सहती है।

अपने सारे सपने

अपने बच्चों के लिए देखती है।

कैसे उसे दुनिया की हर खुशी दे दूँ,
हर पल बस यही सोचती रहती है।

तेरी गलती पर वह तुझे प्यार से समझाती है,
फिर भी न समझे तो डाँटती, फटकारती है,
लेकिन कोशिश तो बस एक ही करती है—
किसी भी तरह तुझे सही राह दिखाना चाहती है।

तू सीख गया सब तौर-तरीके, सही-गलत की पहचान,
हो गया जवान वह नन्हा बच्चा जो है उस माँ की जान।
पता नहीं क्या कसर रह गई उस ममता वाले आँचल में,
जो आपसी मतभेद के खातिर अपशब्द कहते उस माँ को हैं।

यह कैसी रीत चला दी तूने?
हर बात का गुस्सा बस माँ पर ही!
बदला लेना हो या नीचा दिखाना,
क्यों हर बात का गुस्सा बस माँ पर ही?

गुस्से में हो या मजाक में, गाली तो गाली होती है।
मेरी हो या तुम्हारी माँ, आखिर माँ तो माँ होती है।
क्यों देते हो ऐसी गालियाँ जिनका अर्थ इतना घिनौना है
माँ ने तो नहीं सिखाया, फिर क्या यह तुम्हारी विचारधारा है

जब तक गाली भरे दो-चार शब्द न बोले जाएँ,
इनकी बात शुरू ही नहीं होती।

और उन्हीं दो-चार गालियों के बिना इनकी बात
खत्म भी कहाँ होती है

जरा कभी महसूस करो क्या गुजरती होगी उस माँ पर,
जब उसके बेटे का हमउम्र ही उसके लिए इतने घटिया शब्द बोलता है।

कुछ कहेंगे—“मजाक में है”,

पर क्या यह मजाक इतना जरूरी है

कि किसी माँ को सरेआम बेइज्जत करो यह तुम्हें
कौन-सा शास्त्र सिखाता है

जो देवी है, सम्मान की अधिकारी है, जो पूजनीय है
तुम उसे यूँ अपशब्द कहो यह कैसे सही हो सकता है

एक माँ की गुजारिश सुन लो,

बेटा, तकलीफ होती है मुझे

जब कोई अपने झगड़े के खातिर इतने घटिया शब्द कहता है
इस पुरुष-प्रधान समाज में क्यों मेरी बस इतनी-सी इज्जत रहे

आज मुझे बस मुक्ति दे दो

इन गंदे दुरवचनों से।

नहीं दे सकते इज्जत तो मत दो, पर

मत करो मुझे यूँ नीलाम।

कुछ ज्यादा नहीं, बस आज

हर मुझ जैसी माँ को

इतना-सा उपहार दे दो—

कि न करोगे किसी माँ को शामिल अपने दुरवचनों में।

बस इतना मुझे सम्मान दे दो,

बस इतना मुझे अधिकार दे दो।



बेचारे पति जी

मान्या कुलश्रेष्ठ
तकनीकी अधिकारी 'बी'

पत्नी जी जब से हैं आई,
सुबह की चाय हमने ही बनाई,
अखबार की करता हूँ जब पढ़ाई,
तो बचे कामों की टू-डू-लिस्ट जाती है सुनाई।

नाश्ता बनाकर जो पत्नी देखे मुझे,
सोच में पड़ जाता हूँ कि कहना क्या है मुझे,
पहले भर लूँ पेट या तारीफ करूँ,
हो जाता है कंप्यूजन, क्या मैं करूँ,

यदि कर दी तारीफ बड़ी,
तो पेट की आफत बढ़ी,
एक तो, और ले लो के नाम पर होती है बारगेन,
प्यार के मारे फंस गया बेचारा,
लव में इट्स आल हर गेन।

शप्तशती की रात, जो दिलवाए गए वचन सात,
शादी के लड्डू के लालच में, पति बेचारा भूला सब उसी रात,
पर वचनों को अस्त्र बनाने में पत्नी जी हैं खूब चतुर,
ब्रह्ममास्त्र को प्रयोग करने में रहती हैं आतुर,
बताओ! क्या है तुम्हारी आय और व्यय,
महीने में इतने सारे पैसे कहाँ गए,
बताओ मुझे छोड़, किस-किस को तुमने दिया उपहार,
एक के बाद एक वार।

पार्टी में कहीं हो जाना अगर,
कह भी दो, हो जाना तैयार समय पर मगर,
आँखों का काजल, पाउडर और लिपस्टिक,
चलते-चलते तक होते नहीं हैं स्टिक।
टिक-टिक, टिक-टिक चलती है जो घड़ी,
हमें बाहर बैठे होती है हड़बड़ी।
वेन्यु पर पहुँचने पर, पुछा जाए
कि हो गए लेट क्यूँ, सर,
तो ले लो ब्लेम अपने सर,
और बन जाओ अच्छे वर।

पति बनना कोई आसान नहीं,
होनी चाहिए सभी कलाएं कहीं ना कहीं,
कभी बावर्ची बनके खाना पकाएं,
कभी बच्चों को घुमाएँ,
कभी कवि बनके पत्नी को सराहें,
हमेशा अच्छे फोटोग्राफर की भूमिका निभाएं,
हमेशा हैप्पी कैशिएर बन मुस्कुराते खर्चा करते जाएँ,
कभी अच्छे गायक बन पत्नी को गाना सुनाएँ,
हमेशा अच्छे पॉलिटिशियन बन,
माँ और पत्नी में सैंडविच बन जाए,
ये सब हस्बैंड हँसते-हँसते करते जाएँ,
तभी तो अच्छे पति कहलाएं।
अच्छा पति जो बन जाए,
मानो लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड वो पाए।



वार्षिक रिपोर्ट 2025 (खेल गतिविधियाँ)

1. आईएसएसए स्थापना दिवस खेल गतिविधि

आईएसएसए ने दिनांक 19 सितंबर 2025 को अपना 66वां स्थापना दिवस मनाया। इस अवसर पर कई खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्रत्येक खेल-आयोजनों में कार्मिकों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। पुरुष और महिला वर्ग के लिए कुल 7 खेल गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्रत्येक आयोजन के विजेता और उप-विजेता को मेडल द्वारा पुरस्कृत किया गया। इन खेल आयोजनों को सफल बनाने के लिए चार कार्मिकों ने खेल-समन्वयक की भूमिका का निर्वहन किया। पूर्ण विवरण इस प्रकार है:-

खेल (पुरुष वर्ग) 2025

खेल	विजेता	उप-विजेता
क्रिकेट	डॉ विकास कुमार शर्मा (विजेता टीम के कप्तान) रोबिन गिरसा (मैन ऑफ द मैच)	
बॉल इन द बास्केट	अंकित सिंह	कमल सिंह
डार्ट	मयंक	आफताब
हिट द स्टंप	आफताब	ईश्वर सिंह
टीटी गेंद दौड़	सौरभ पाटिल	मोहम्मद इब्राहिम

खेल (पुरुष वर्ग) 2025

खेल	विजेता	उप-विजेता
बॉल इन द बास्केट	डोरोथी थंग्नेहोई	नेहा अग्रवाल
डार्ट	नेहल पांडेय	डोरोथी थंग्नेहोई
रस्सा कूदना	नेहा अग्रवाल	पूनम भास्कर सिंहमार
म्यूजिकल चेयर	कमलेश देवी	निधि अरोरा करी

खेल समन्वयक

विशाल अग्रवाल
नेहा अग्रवाल
सुनील यादव
मुहम्मद इब्राहिम

2. डीआरडीओ उत्तर जॉन प्रतियोगिता

विभिन्न डीआरडीओ प्रयोगशालाओं द्वारा आयोजित विभिन्न डीआरडीओ उत्तर जॉन प्रतियोगिता में आईएसएसए टीम ने भाग लिया जिसका विवरण इस प्रकार है:-

खेल	अवधि	आयोजक प्रयोगशाला	प्रतिभागी
कैरम	06-08 अगस्त 2025	जेसीबी, दिल्ली	1
शतरंज	27-29 अगस्त 2025	डील, देहरादून	5
वॉलीबॉल	06-08 अक्टूबर 2025	एडीआरडीई, आगरा	8
क्रिकेट	01-06 दिसंबर 2025	आईआरडीई, देहरादून	1

3. डीआरडीओ राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता

आईएसएसए की शतरंज टीम अत्यंत मजबूत है जिसमें से 3 खिलाड़ियों का चयन उत्तर जॉन की टीम का प्रतिनिधित्व करने के लिए डीआरडीओ राष्ट्रीय शतरंज प्रतियोगिता हेतु किया गया।

खेल	अवधि	आयोजक प्रयोगशाला	प्रतिभागी
शतरंज	15-17 अक्टूबर 2025	आर-डी(ई) दिघी, पुणे	3
क्रिकेट	20-23 जनवरी 2026	एचईएमआरएल, पुणे	1

4. फिट इंडिया फ्रीडम रन 6-0

खेल विभाग, 'युवा मामले और खेल मंत्रालय' के निर्देशानुसार, फिट इंडिया फ्रीडम रन का 6वां संस्करण 2025 में "फिट इंडिया फ्रीडम रन" के रूप में 'स्वच्छता और स्वास्थ्य' थीम के रूप पर दिनांक 2 अक्टूबर 2025 से 31 अक्टूबर 2025 तक आयोजित किया गया।

आईएसएसए ने इस कार्यक्रम को मनाया और डीआरडीओ मुख्यालय (पत्र संख्या **DSB/DO/Pres/25** दिनांक 06 अक्टूबर 2025) और FIFR 6-0 के SOP के निर्देशानुसार 29 अक्टूबर 2025 को एक दौड़/पैदल चलने का कार्यक्रम आयोजित किया गया। आईएसएसए ने मेटकॉफ भवन परिसर से कुदसिया पार्क (आईएसबीटी कश्मीरी गेट के पास) तक 70 से अधिक प्रतिभागियों के साथ 6 किमी की वॉक/दौड़ का आयोजन किया। कुदसिया पार्क 18वीं सदी का एक प्रसिद्ध पार्क परिसर है। भारतीय स्वतंत्रता संग्राम आंदोलन में इसके कई सन्दर्भ मिलते हैं।

5. एकता मार्च 2025

गृह मंत्रालय द्वारा 'राष्ट्रीय एकता दिवस' के अवसर पर 'एकता मार्च' का आयोजन मेजर ध्यानचंद स्टेडियम में 31 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस कार्यक्रम में आईएसएसए संस्थान की ओर से 6 कार्मिकों (5 पुरुष और 1 महिला) ने भाग लिया।



राजभाषा गतिविधियां

संस्थान, राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के प्रति सजग एवं प्रतिबद्ध है। हिंदी में कार्य करने के लिए निर्धारित सभी अनुभाग दैनिक रूप से प्रशासनिक कार्य हिंदी में कर रहे हैं। 80 प्रतिशत से अधिक कार्मिकों को हिंदी का ज्ञान होने के कारण संस्थान राजभाषा नियम 1976 के नियम 10(4) के अंतर्गत पहले से ही अधिसूचित है। हिंदी में बेहतर कार्यान्वयन के दृष्टिकोण से जांच बिंदु जारी किए गए हैं तथा हिंदी में प्रवीणता प्राप्त कार्मिकों को व्यक्तिशः आदेश जारी किए गए हैं।

प्रत्येक वर्ष गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा वार्षिक कार्यक्रम प्राप्त होता है। इसमें निर्दिष्ट लक्ष्यों को दैनिक आदेश में जारी किया गया है। राजभाषा गतिविधियों को बढ़ावा देने एवं कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रेरित करने के दृष्टिकोण से डिजिटल डिस्प्ले एवं स्थानीय नेटवर्क ईसानेट का प्रयोग किया जा रहा है।

प्रत्येक तिमाही में एक कार्यशाला और एक राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक आयोजित की जाती हैं। संस्थान, 'नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति', उत्तरी दिल्ली का सदस्य है जिसकी वर्ष में दो बैठकें आयोजित की जाती हैं। 12वीं छमाही बैठक दिनांक 25.09.2025 को ए पी शिंदे सभागार, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नई दिल्ली में आयोजित हुई जिसमें निदेशक महोदया उपस्थित रहीं। इसी बैठक में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए मध्यम श्रेणी के कार्यालयों की श्रेणी में आईएसएसए को प्रथम पुरस्कार प्रदान किया गया। वर्ष 2025 की द्वितीय एवं 13वीं छमाही बैठक दिनांक 16.12.2025 को कृषि अभियांत्रिकी सभागार, राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केंद्र परिसर, पूसा, नई दिल्ली में आयोजित हुई। इस बैठक में संस्थान से निदेशक महोदया के साथ उपाध्यक्ष एवं राजभाषा अधिकारी सम्मिलित हुए।



नराकास द्वारा मध्यम श्रेणी के कार्यालयों की श्रेणी में प्रथम पुरस्कार

वर्ष 2025 के दौरान आयोजित हिंदी कार्यशालाओं, बैठकों और हिंदी दिवस/पखवाड़े आदि का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इनका विवरण इस प्रकार है:

1. हिंदी कार्यशालाएं

दिनांक	कार्यशाला विषय	वक्ता
12 मार्च 2025	प्रौद्योगिकी और हिंदी भाषा	डॉ श्रीनिवास त्यागी, प्रोफेसर गार्गी कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय
17 जून 2025	स्व-विकास में राजभाषा हिंदी का योगदान	डॉ राजेश कुमार त्रिपाठी, वैज्ञानिक 'ई' डीआईपीआर, डीआरडीओ
02 सितम्बर 2025	राजभाषा नीति एवं नियम	श्री अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'एफ' आईएसएसए, डीआरडीओ
25 नवम्बर 2025	हिंदी में विज्ञान लेखन और अनुवाद की कला	श्री देवेन्द्र मेवाड़ी, वरिष्ठ लेखक एवं विज्ञान कथाकार



कार्यशाला का शुभारम्भ करते हुए



अतिथि वक्ता का सम्मान



वक्ता व्याख्यान देते हुए



अतिथि वक्ता को सम्मानित करते हुए

2. बैठकें

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकें दिनांक 21 मार्च, 18 जून, 10 सितम्बर और 15 दिसम्बर 2025 को आयोजित की गईं।

3. हिंदी दिवस/ हिंदी पखवाड़ा

इस वर्ष भी हिन्दी दिवस का शुभारंभ दिनांक 14-15 सितम्बर 2025 के दौरान गांधीनगर, गुजरात में आयोजित पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन से हुआ जिसमें ईसा संस्थान की ओर से वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी डॉ सुखजीत सिंह ने भाग लिया। संस्थान में दिनांक 17 सितंबर से 26 सितंबर 2025 के दौरान हिंदी दिवस/हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया एवं समापन 09 अक्टूबर 2025 को किया गया। इस दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिसमें नोटिंग व ड्राफ्टिंग, अनुवाद, टंकण प्रतियोगिताओं को डीआरडीएस व डीआरटीसी वर्ग और प्रशासन व सम्बद्ध वर्ग में विभाजित किया गया। साथ ही हिंदी श्रुतलेख एवं सुलेख प्रतियोगिता के अंतर्गत सामान्य तथा वाहन चालक, एमटीएस व एएलएस कार्मिकों को प्रोत्साहित करने हेतु विशेष वर्ग का प्रावधान करते हुए प्रतियोगिता आयोजित की गई। इसके अतिरिक्त निबंध, तकनीकी शोध लेख, कविता-पाठ, आशु भाषण, मुखपृष्ठ डिजाइन, अंत्याक्षरी और सामान्य ज्ञान प्रतियोगिताओं का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में वैज्ञानिकों, अधिकारियों और कर्मचारियों ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया।



उद्घाटन समारोह की झलक



प्रतियोगिता के दौरान



समापन समारोह के दौरान पुरस्कार वितरण



निदेशक महोदया द्वारा सम्मानित

मुखपृष्ठ डिजाइन प्रतियोगिता

1. राजकुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
2. आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
3. आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
4. राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
5. ईश्वर सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी'

श्रुतलेख एवं सुलेख

1. पूजा, वैज्ञानिक 'बी'
2. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
3. जय शंकर कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'
4. तजिंदर कौर, निजी सचिव
5. दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'बी'

विशेष प्रतिभागी वर्ग

1. विक्रम दत्त, वाहन चालक 'बी'
2. अर्चना चौहान, एमटीएस
3. मुकेश चन्द्र गुर्जर, वाहन चालक 'बी'
4. कपीश कुमार, वाहन चालक 'सी'
5. सुनील कुमार, एएलएस
6. डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

टिप्पण एवं मसौदा लेखन

प्रशासन एवं संबद्ध

1. आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
2. संदीप कुमार सिंह, प्रशासनिक सहायक 'ए'
3. विक्की गुर्जर, प्रशासनिक सहायक 'ए'

डीआरडीएस / डीआरटीसी

1. मुहम्मद इब्राहिम, तकनीकी अधिकारी 'ए'
2. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
3. राकेश कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
4. संजीव कुमार, तकनीकी अधिकारी 'सी'
5. मनीष कुमार श्रीवास्तव, वरिष्ठ त. स. 'बी'

कविता-पाठ

1. पूजा, वैज्ञानिक 'बी'
2. अनुराग पाठक, वैज्ञानिक 'एफ'
3. चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'
4. नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
5. राजकुमार, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

प्रथम

1. ललित मोहन गुप्ता, वैज्ञानिक 'ई'
2. नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
3. सुनील यादव, तकनीकी अधिकारी 'ए'

द्वितीय

1. राजीव गुप्ता, तकनीकी अधिकारी 'बी'
2. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
3. अंकुर महाजन, प्रशासनिक सहायक 'बी'

तृतीय

1. अमित कुमार, वैज्ञानिक 'बी'
2. अग्निभ दासगुप्ता, वैज्ञानिक 'बी'
3. ललन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'

अंत्याक्षरी

प्रथम

1. महेंद्र प्रताप सिंह, वैज्ञानिक 'ई'
2. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
3. आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
4. भावुक, प्रशासनिक सहायक 'ए'

द्वितीय

1. वरुण कुमार सिंह, वैज्ञानिक 'एफ'
2. राजीव गुप्ता, तकनीकी अधिकारी 'बी'
3. श्रीपर्णा डे, वैज्ञानिक 'बी'
4. लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'

तृतीय

1. नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
2. दिनेश कुमार शर्मा, भण्डार अधिकारी
3. सुमेश कुमार, प्रशासनिक अधिकारी
4. अंजली शर्मा, तकनीशियन 'ए'

टंकण

प्रशासन एवं संबद्ध

1. तजिंदर कौर, निजी सचिव
2. संदीप कुमार, प्रशासनिक अधिकारी
3. सुरेन्द्र सिंह रावत, प्रशासनिक अधिकारी
4. विक्की गुर्जर, प्रशासनिक सहायक 'ए'
5. अंकुर महाजन, प्रशासनिक सहायक 'बी'

डीआरडीएस एवं डीआरटीसी

1. दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'बी'
2. लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
3. आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
4. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
5. मुहम्मद इब्राहिम, तकनीकी अधिकारी 'ए'

निबंध

1. दीपिका शर्मा, तकनीकी अधिकारी 'बी'
2. कपीश कुमार, वाहन चालक 'सी'
3. चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'
4. मनीष कुमार श्रीवास्तव, वरि. तक. सहा. 'बी'
5. अवधेश कुमार गौतम, वैज्ञानिक 'ई'
6. नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी' (विशेष)

चित्र आधारित कहानी लेखन

1. अर्चना चौहान, एमटीएस
2. आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
3. नेहा अग्रवाल, वैज्ञानिक 'ई'
4. विक्रम दत्त, वाहन चालक 'बी'
5. नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'

तकनीकी शोध लेख

1. चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'
2. रमिता सरदाना, वैज्ञानिक 'एफ'
3. ईश्वर सिंह, तकनीकी अधिकारी 'बी'
4. श्रीपर्णा डे, वैज्ञानिक 'बी'
5. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'

आशु भाषण

1. मीनाक्षी चतुर्वेदी, भण्डार सहायक 'ए'
2. नंदी शर्मा, लेखाकार
3. नेहल पाण्डेय, तकनीकी अधिकारी 'ए'
4. लीला चौहान, तकनीकी अधिकारी 'ए'
5. प्रणव कुमार, वैज्ञानिक 'ई'

अनुवाद

डीआरटीसी / डीआरडीएस

1. मान्या कुलश्रेष्ठ, तकनीकी अधिकारी 'बी'
2. मुहम्मद इब्राहिम, तकनीकी अधिकारी 'ए'
3. ललन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'ए'
4. आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'
5. डोरोथी थंगनेहोई, वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'

3. मीनाक्षी चतुर्वेदी, भण्डार सहायक 'ए'
4. अर्चना चौहान, एमटीएस
5. भावुक, प्रशासनिक सहायक 'ए'

प्रतिभागिता पुरस्कार

1. सौरभ कुमार, प्रशासनिक सहायक 'बी'
2. पूनम यादव, तकनीकी अधिकारी 'ए'
3. पवन कुमार, वरिष्ठ भण्डार सहायक

प्रशासन एवं संबद्ध

1. आरती शर्मा, लेखा अधिकारी
2. सुनील कुमार, वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक

4. हिंदी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका'

निदेशक महोदया के कर-कमलों द्वारा संस्थान की हिंदी गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' के 'तकनीकी एवं वैज्ञानिक लेखन' अंक 24 और 'साहित्यिक एवं विविध' अंक 25 का विमोचन किया गया। साथ ही इन अंकों का प्रेषण डीआरडीओ की विभिन्न प्रयोगशालाओं व संस्थानों में किया गया।



गृह-पत्रिका 'विश्लेषिका' का विमोचन

5. हिंदी प्रोत्साहन योजना: मार्च 2026 (वित्त वर्ष 2025-26) के दौरान हिंदी प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत सरकारी कामकाज (टिप्पण/आलेखन) मूल रूप से हिंदी में करने तथा अधिकारियों द्वारा हिंदी में श्रुतलेख (डिक्टेशन) देने के लिए नीचे दिए गए विवरण के अनुसार पुरस्कार प्रदान किए गए—

सरकारी कामकाज (टिप्पणी एवं आलेखन) मूल रूप से हिन्दी में करने के लिए

	नाम	पदनाम	पुरस्कार
प्रथम (02)	श्रीमती नीलम	वरिष्ठ प्रशासनिक सहायक	₹.5000
	श्रीमती डोरोथी थंगनेहोई	वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'	₹.5000
द्वितीय (03)	श्री सौरभ कुमार	प्रशासनिक सहायक 'बी'	₹.3000
	श्री संदीप कुमार	प्रशासनिक सहायक 'ए'	₹.3000
	श्रीमती कविता धवन	निजी सचिव	₹.3000
तृतीय (05)	श्रीमती मान्या कुलश्रेष्ठ	तकनीकी अधिकारी 'बी'	₹.2000
	श्री विक्रम दत्त	वाहन चालक 'बी'	₹.2000
	श्री मुहम्मद इब्राहिम	तकनीकी अधिकारी 'ए'	₹.2000
	श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव	वरिष्ठ तकनीकी सहायक 'बी'	₹.2000
	श्री दीपक कुमार	सुरक्षा सहायक 'ए'	₹.2000
अधिकारियों द्वारा हिन्दी में श्रुतलेख (डिक्टेशन देने के लिए)			
1.	श्री अमित धवन	वैज्ञानिक 'जी'	₹.5000
2.	श्री सुरेन्द्र रावत	प्रशासनिक अधिकारी	₹.5000

6. **हिन्दी संगोष्ठी:** संस्थान की ओर से विभिन्न क्लस्टर द्वारा आयोजित अखिल भारतीय संयुक्त राजभाषा वैज्ञानिक एवं तकनीकी संगोष्ठी हेतु निम्नलिखित लेख प्रेषित किए गए:

क्लस्टर	विषय	नाम एवं पदनाम
कॉर्पोरेट क्लस्टर, सेप्टेम (19-20 फरवरी 2026)	वैश्विक संघर्षों के सन्दर्भ में भारत की उभरती रक्षा-प्रणाली: स्वदेश क्षमताएं, तकनीकी अन्तराल और 2035 की रणनीतिक रूपरेखा	डॉ विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
	विकसित भारत-2047, डीआरडीओ का वैज्ञानिक एवं तकनीकी योगदान	श्री नितिन कुमार, तकनीकी अधिकारी 'बी'
एमसीसी क्लस्टर, एसएसपीएल (29-30 जनवरी 2026)	रिचर्डसन आर्म्स रेस मॉडल के परिपेक्ष्य में भारत की रणनीतिक सुरक्षा और रक्षा बजट का गणितीय विश्लेषण	श्री विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
	सॉफ्टवेयर की लागत, प्रयास और समय के अनुमान में एआई का अनुप्रयोग	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'
	21वीं सदी में उन्नत सेमीकंडक्टर प्रौद्योगिकी की राष्ट्रीय विकास में संभावनाएं	श्री नितिन कुमार, तक. अधि. 'बी'
	फायरवॉल प्रौद्योगिकियां नेटवर्क सुरक्षा की आधारशिला	सुश्री चित्रा कुशवाहा, वैज्ञानिक 'बी'
	कृत्रिम बुद्धिमत्ता वर्तमान और भविष्य	श्री अग्निभ दासगुप्ता, वैज्ञानिक 'बी'
	साहित्य समीक्षा को सरल बनाने में दस्तावेज सारांश हेतु कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग	सुश्री श्रीपर्णा डे, वैज्ञानिक 'बी'
रक्षा अनुसंधान: युद्धक्रीड़ा की प्रासंगिकता	श्रीमती मान्या कुलश्रेष्ठ, त. अ. 'बी'	

क्लस्टर	विषय	नाम एवं पदनाम
एमसीसी क्लस्टर, एसएसपीएल (29-30 जनवरी 2026)	संचार एवं सूचना गोपनीयता	श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव, व. तक. सहा. 'बी'
	डिजिटल युग में हिंदी का महत्व	श्री संदीप कुमार सिंह, प्रशा. सहा. 'ए'
	कृत्रिम बुद्धिमत्ता	श्री साहिल, तकनीशियन 'ए'
	यूजर इंटरफेस से इंटेलिजेंस तक: आधुनिक फ्रंटएंड में एआई का समावेश	सुश्री अंजलि शर्मा, तकनीशियन 'ए'
उन्मेष 2026, मुख्यालय एवं एनपीओएल (10-11 जनवरी 2026)	विश्लेषणात्मक विधि तथा मॉटे कार्लो सिमुलेशन द्वारा रनवे और आरसीसी संरचनाओं पर क्षति आकलन एवं न्यूनतम आयुध निर्धारण	डॉ विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
	वनाग्नि प्रसार का पूर्वानुमान: तापीय एवं समय शृंखला मौसमीय आंकड़ों पर आधारित एक मशीन लर्निंग दृष्टिकोण	श्री आनंद प्रकाश, वैज्ञानिक 'ई'

एमसीसी समूह द्वारा आयोजित उपर्युक्त संगोष्ठी में सत्र सर्वश्रेष्ठ शोध-लेख प्रस्तुति हेतु डॉ विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' को पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया तथा उन्मेष-2026 सम्मेलन में भी डॉ विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ' को सत्र सर्वश्रेष्ठ शोध-लेख प्रस्तुति हेतु द्वितीय पुरस्कार द्वारा सम्मानित किया गया।

7. विविध कार्य

- वित्त वर्ष 2024-25 के दौरान किये गए व्यय का स्थानीय लेखा परीक्षण सफलतापूर्वक और वर्ष 2023-25 हेतु टेस्ट लेखा परीक्षण इस वर्ष संपन्न हुआ।
- हिंदी गतिविधियों के अंतर्गत समय-समय पर अन्य अनुभागों द्वारा प्राप्त मूल अंग्रेजी विषयवस्तु/सामग्री का हिंदी में अनुवाद किया गया। कंप्यूटरों पर हिंदी में कार्य करने के लिए आवश्यक टूल मंगल फांट उपलब्ध कराए गए हैं।
- संस्थान द्वारा संसदीय कार्य, राजभाषा तथा संगठन पद्धति निदेशालय से प्राप्त निर्देशों का पालन करते हुए तथा राजभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रचार-प्रसार हेतु राजभाषा प्रभाग द्वारा संस्थान में मासिक हिंदी प्रतियोगिता का समूहवार आयोजन करवाया गया। विजेताओं की सूची इस प्रकार है:-

मासिक हिंदी प्रतियोगिता के परिणाम

जून माह

प्रथम : श्रीमती आरती शर्मा, लेखा अधिकारी

द्वितीय : श्रीमती तजिंदर कौर, निजी सचिव

तृतीय : श्री सुरेन्द्र, प्र. स. 'बी'

जुलाई माह

प्रथम : श्री महेंद्र प्रताप सिंह, वैज्ञानिक 'ई'

द्वितीय : श्री आनंद कुमार सिंह, वरिष्ठ त. स. 'बी'

तृतीय : श्री नितिन कुमार, त. अ. 'बी'

अगस्त माह

प्रथम : श्री साहिल, तकनीशियन 'ए'

द्वितीय : श्री ललन कुमार, त. अ. 'ए'

तृतीय : श्री मुहम्मद इब्राहिम, त. अ. 'ए'

सितम्बर माह

- प्रथम : श्री कालू राम, एएलएस-1
द्वितीय : श्रीमती द्रौपती देवी, एमटीएस
तृतीय : श्रीमती कमलेश, एमटीएस
सांत्वना : श्रीमती कमलेश देवी, एमटीएस

अक्तूबर माह

- प्रथम : श्रीमती मान्या कुलश्रेष्ठ, त. अ. 'बी'
द्वितीय : सुश्री रेखा रानी, त. अ. 'बी'
तृतीय : श्रीमती पूजा, वैज्ञानिक 'बी'

नवम्बर माह

- प्रथम : डॉ विकास कुमार शर्मा, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय : श्री मुकेश कुमार, त. अ. 'बी'
तृतीय : श्री आफताब, तकनीशियन 'ए'

दिसंबर माह

- प्रथम : श्री जय शंकर कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय : श्री योगेश चन्द्र, वैज्ञानिक 'जी'
तृतीय : श्री सुनील कुमार वर्मा, व. भं. अ.

जनवरी माह

- प्रथम : श्री जय शंकर कुमार, वैज्ञानिक 'एफ'
द्वितीय : श्री मनीष कुमार श्रीवास्तव,
व. त. सहा. 'बी'
तृतीय : श्री ऋषभ डोगरा, तकनीशियन 'ए'

फरवरी माह

- प्रथम : श्री संदीप कुमार सिंह, प्र. स. 'ए'
द्वितीय : श्री राजीव गुप्ता, त. अ. 'बी'
तृतीय : श्रीमती पूजा, वैज्ञानिक 'बी'



बच्चों का कोना

स्वस्थ भोजन है एक वरदान बीमारियों से बचाए जान

आद्या सुपुत्री नेहा अग्रवाल

स्वस्थ भोजन है एक वरदान
बीमारियों से बचाए जान
आद्या सुपुत्री नेहा अग्रवाल

आद्या: देख-देखो अदित्री।
मम्मी ने मुझे दिया है सेब, केला और अंगूर
इससे मिलेंगे मुझे मिनरल और विटामिन भरपूर

तुम भी फल खाओ रोज
ताकि तुम्हें भी मिलें फाइबर डोज

अदित्री: पता है, पता है मुझे भी स्वस्थ भोजन का राज
इसलिए मेरे पास भी है सब्जियों से भरा पराठा आज

मम्मी ने डाला है इसमें कद्दू और बीटरूट
इसे खाकर मेरी भी गई है थकान टूट

आद्या: वाह! तो तुम्हें भी पता है
फल सब्जी दाल-दूध, ये हैं असली खानपान

इससे बढ़ती है ताकत, एकाग्रता और लगे पढ़ाई में ध्यान

अदित्री: बिलकुल सही आद्या
जूस, कोल्ड ड्रिंक को छोड़ो आज माना
दूध-दही है असली खजाना

हड्डियां बने मजबूत, शरीर में रहे ताकत हरदम
अगर बना लें हम, रोज इन्हें खाने का नियम

आद्या: मैं भी कहना चाहूंगी एक बात
जंक फूड करे स्वास्थ्य बर्बाद

पिज्जा बर्गर सिर्फ है स्वाद में अच्छे
दाल और हरी सब्जियां ही हैं दोस्त सच्चे

दालों में है प्रोटीन का तड़का
हरी सब्जियों पर चश्मा भड़का

अदित्री: दोस्तों आप भी मानो हमारी बात
जनक फूड का चूड़ो साथ
और पौष्टिक भोजन से मिलाओं हाथ

दोनों (आद्या और अदित्री) एक साथ: तंदुरुस्ती
की यही है कुंजी
हेल्दी खाना है स्वस्थ जीवन की कुंजी



माँ

साएशा कुलश्रेष्ठ सुपुत्री मान्या कुलश्रेष्ठ

माँ, तुम हो ममता की मूरत,
है कितनी प्यारी, तुम्हारी सूरत,
भोली-भाली, प्यारी प्यारी सी माँ,
तुमसे मन में जोश, और प्रकाश है माँ,
तुमसे मुझ में साहस, और विश्वास है, माँ।

झट से जान लेती हो तुम, मेरे दिल का हाल,
परेशान कोई मुझे कर पाए, नहीं किसी की मजाल।
रात से ही हो जाती है, शुरू टिफिन की चिंता,
क्या रखें ऐसा जो हो पौष्टिक, और लजीज भी उतना
मैं रोज अच्छे से खाऊँ, रखती हो हर पल ध्यान,
फिर घर हो या हो पार्टी, या हो कोई भी स्थान।

पढ़ाई की रहती, चिंता तुमको सारी,
बनाकर टेस्ट पेपर, तुम करवाती हो तैयारी,
ओलंपियाड हो, या हो कोई भी प्रतियोगिता,
करवाती तैयारी ऐसी, कि दिखा सकूँ अपनी योग्यता।
किताबों और कापियों में, चढ़ाती हो तुम कवर,
नई कक्षा में देती तुम, नया जोश और नया हुनर।

मेरे जन्मदिन को, त्यौहार की तरह मनाती हो,
माँ, सुबह से सजावट, और पकवान तुम बनाती हो।
नयी ड्रेस, और नए जूते मंगवाती हो,
घर पर पार्टी की, सारी सिरदर्दी तुम उठाती हो।
बीमार हो जाऊँ कभी तो, परेशान तुम हो जाती हो,
रखती हो ख्याल बड़ा, रात-रात भर जगती हो।
खेलूँ, कूदूँ, खुश रहूँ, तो खुश, तुम हो जाती हो,
मैडल मुझे मिले, तो रो तुम जाती हो।

मेरे दिन की शुरुआत तुम्ही से, तुमसे ही है रात,
तुमसे कर लेती हूँ मैं, अपने दिल की सारी बात।
करती हूँ बहुत बहुत प्यार, तुमसे मैं, माँ,
तुम ही तो हो, मेरा सारा आसमाँ।



बच्चों की कलाकृतियाँ



पार्थ सुपुत्र तजिंदर कौर



आदर्श सुपुत्र कल्पना कैथल



संदीप्ता सुपुत्री संजय सिंह



अर्थव सुपुत्र रोबिन गिरसा



विराट सुपुत्र लीला चौहान



आद्या सुपुत्री नेहा अग्रवाल



गर्व सुपुत्र लोकेश



विराट सुपुत्र लीला चौहान



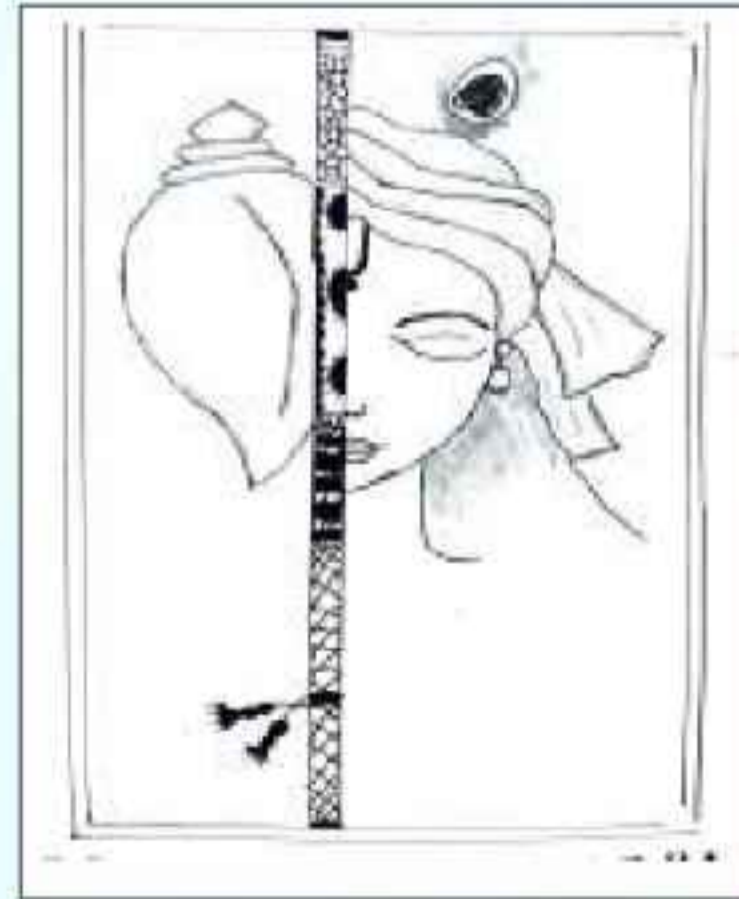
साएशा सुपुत्री मान्या कुलश्रेष्ठ



विराट सुपुत्र लीला चौहान



पार्थ सुपुत्र तजिंदर कौर

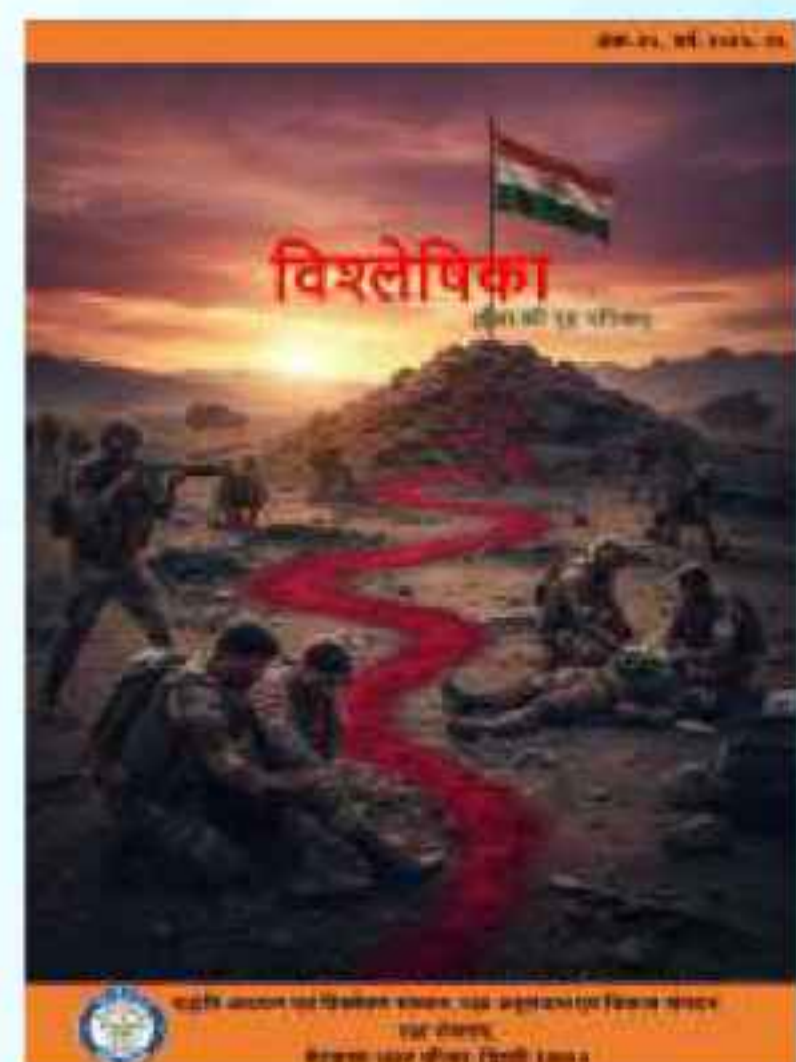
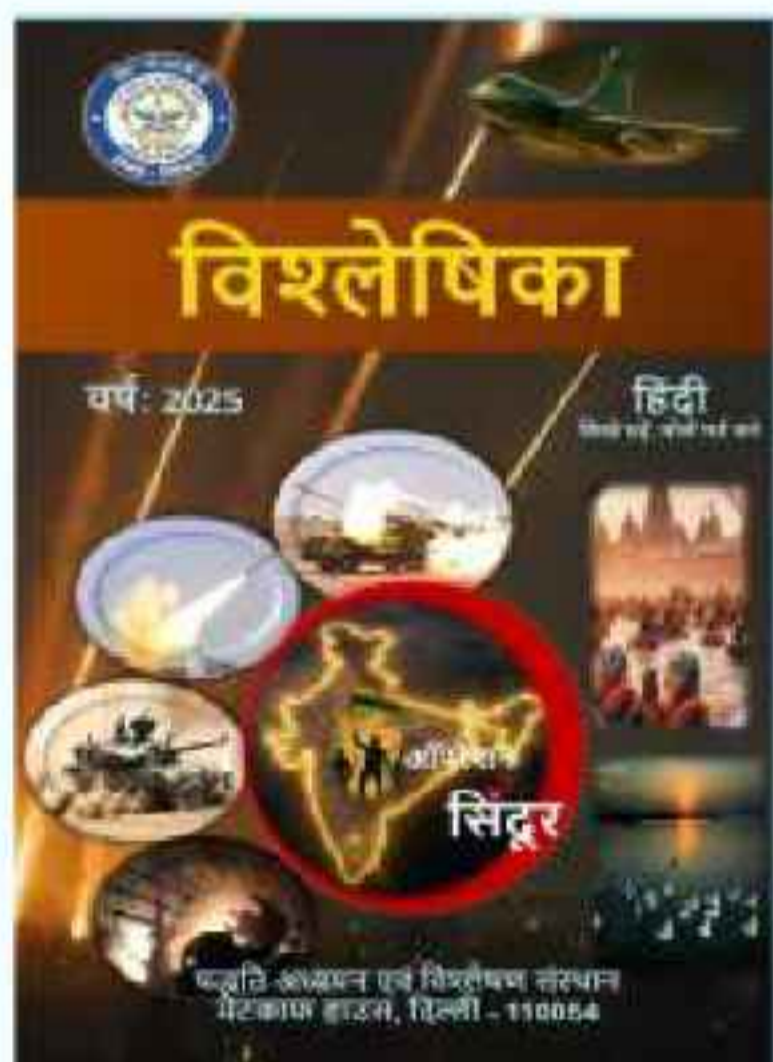
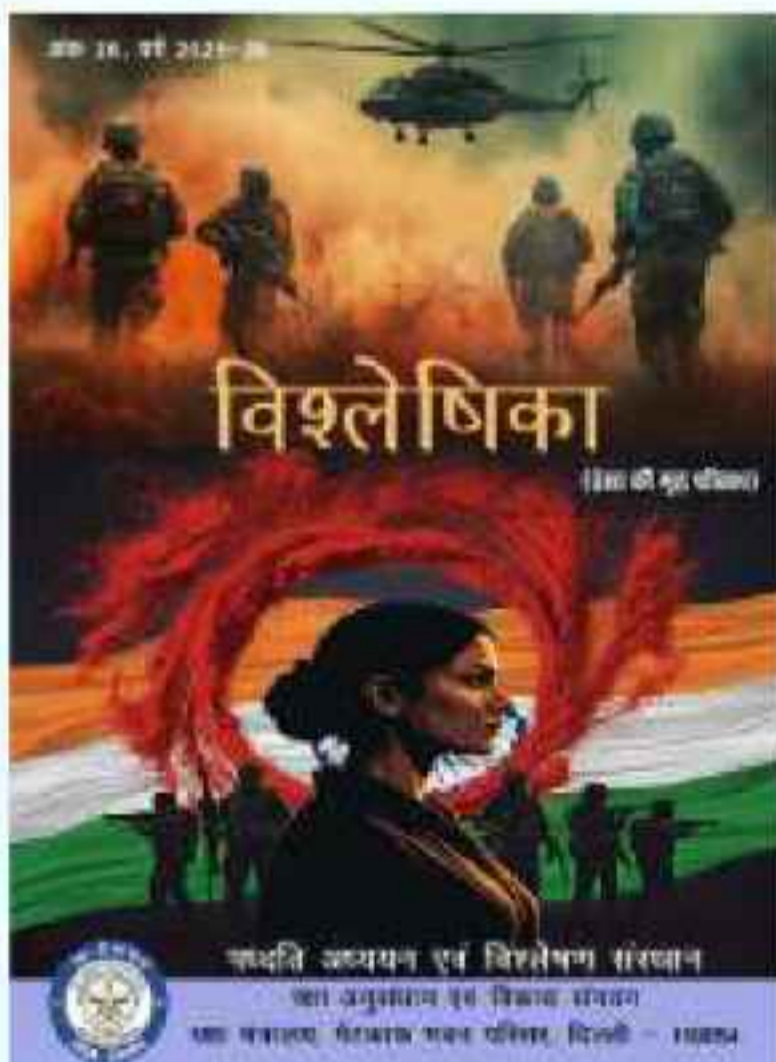
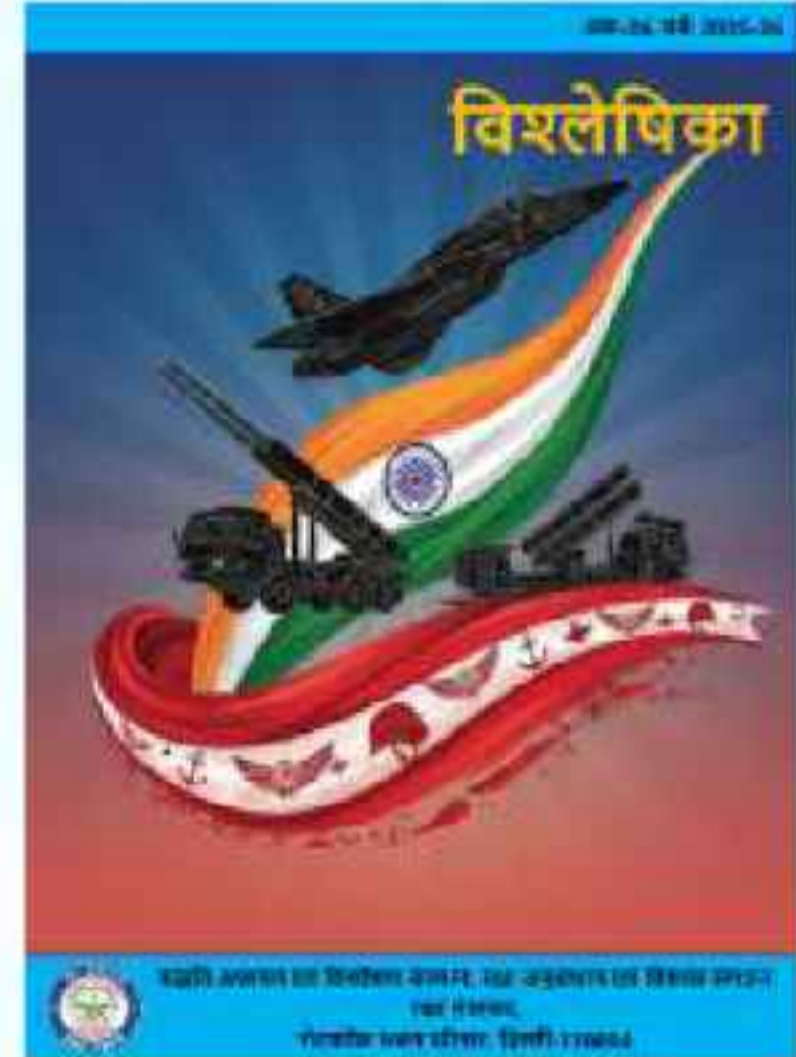
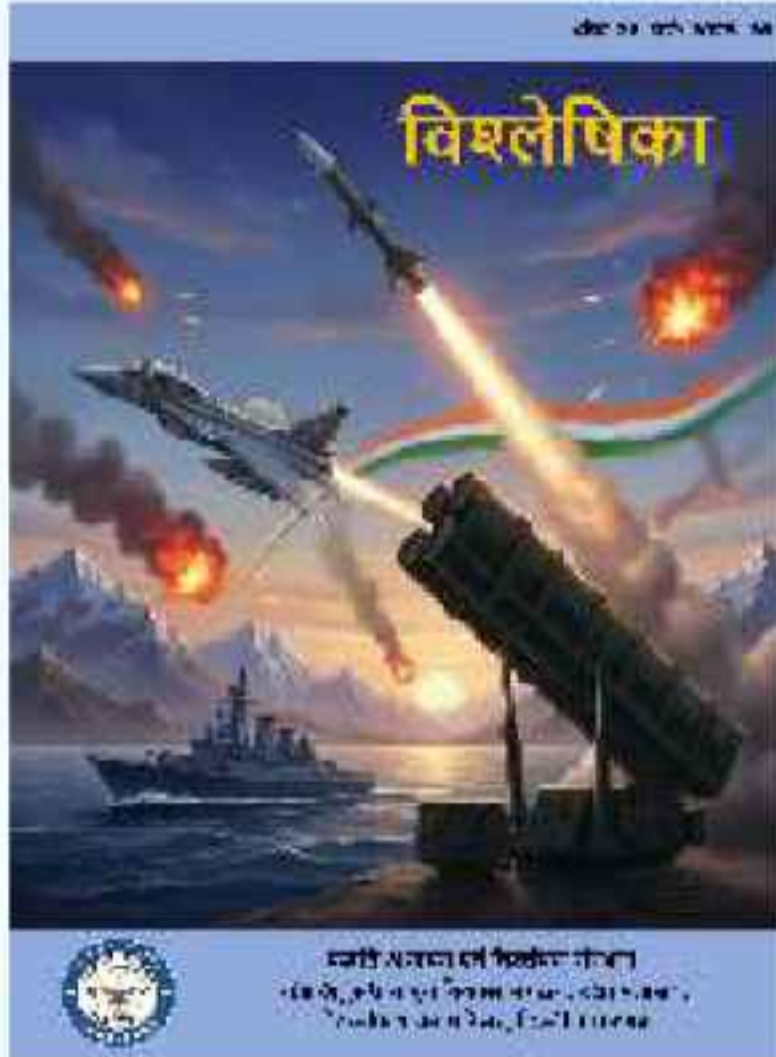


अगमजोत भतीजा सुखजीत सिंह



साएशा सुपुत्री मान्या कुलश्रेष्ठ

मुखपृष्ठ डिजाइन प्रतियोगिता



चित्र-दीर्घा









भविष्य निरूपण

सशस्त्र बलों के वर्तमान तथा भविष्य की चुनौतीपूर्ण आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए संस्थान को पद्धति विश्लेषण, मॉडलिंग और रक्षा प्रणालियों के सिमुलेशन आदि क्षेत्र में एक सर्वोत्तम केन्द्र के रूप में विकसित करना।

लक्ष्य

संवेदकों, अस्त्र-शस्त्र, इलेक्ट्रॉनिकीय युद्ध, थल, वायु एवं नौसेना युद्ध, हवाई रक्षा और निर्णय सहायक प्रणाली के क्षेत्र में पद्धति अध्ययन करना और उनके लिए उच्च गुणवत्ता वाले एकीकृत सॉफ्टवेयर विकसित करना तथा इनका उपयोग डीआरडीओ और सेनाओं के लिए डिजाइन, रणनीति विकास, मिशन योजना और प्रशिक्षण में प्रभावी रूप से करना।



पद्धति अध्ययन एवं विश्लेषण संस्थान

रक्षा अनुसंधान एवं विकास संगठन

रक्षा मंत्रालय, मेटकॉफ भवन परिसर, दिल्ली-110054